@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

माही संदेश

वह संसार
जहाँ तक पहुँची
अब तक नहीं किरण है
जहाँ क्षितिज है शून्य
अभी तक अंबर तिमिर वरण है
देख जहाँ का दृश्य आज भी
अन्तः स्थल हिलता है
माँ को लज्ज वसन और
शिशु को न क्षीर मिलता है

रामधारी सिंह 'दिनकर'

वर्ष : 2 अंक : 1 अप्रैल : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

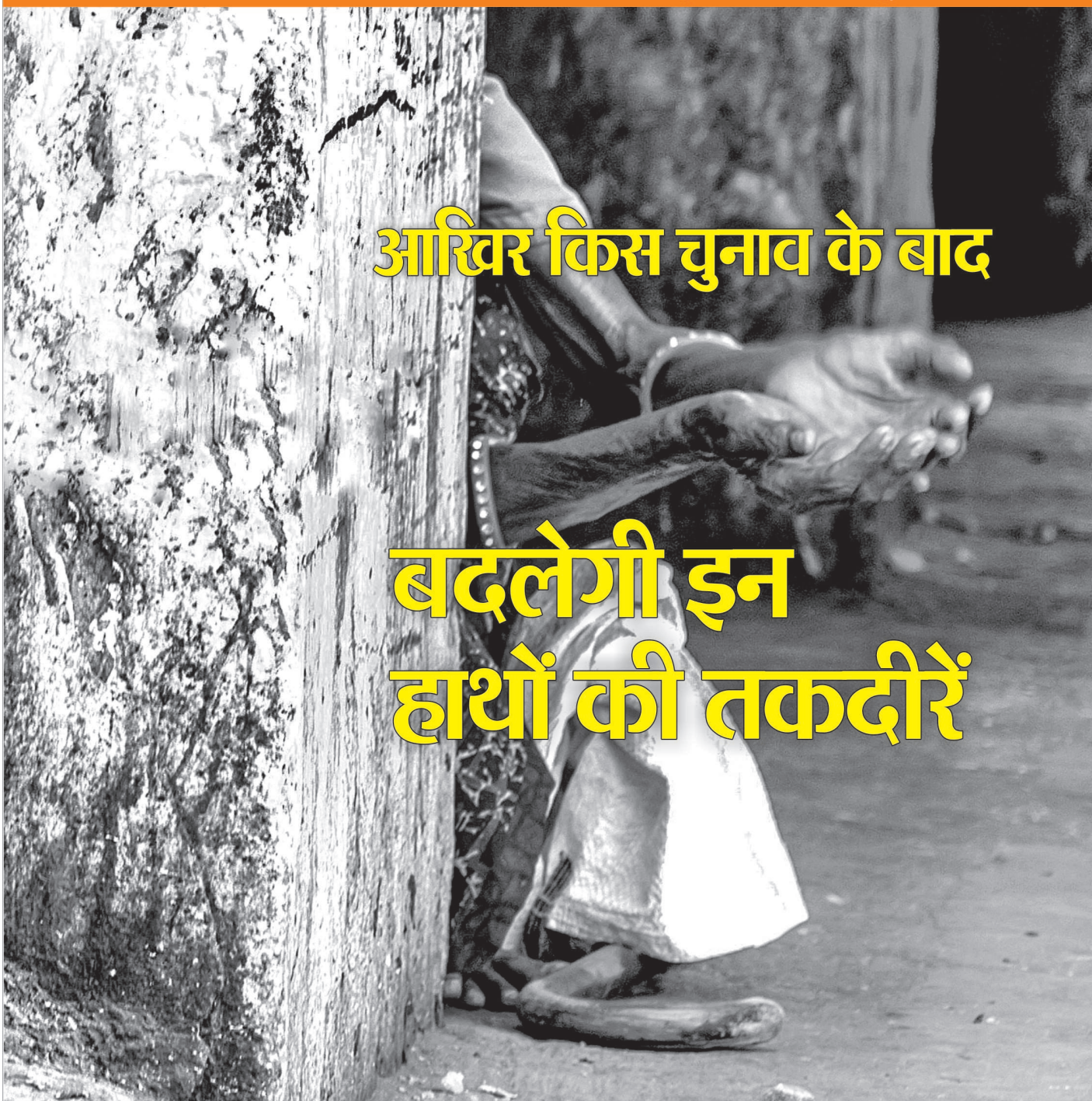

आखिर किस चुनाव के बाद

बदलेगी इन हाथों की तकदीरें

हैड इंजरी मेडिकल की दुनिया में 100 प्रतिशत प्रिवेंटिव है

ट्यूमर होने का मतलब यह नहीं है कि ज़िन्दगी खत्म, इलाज संभव है

डॉ. के.के. बंसल

विश्व स्वास्थ्य दिवस 7 अप्रैल

विश्व स्वास्थ्य दिवस के उपलक्ष्य में नारायणा अस्पताल के सीनियर न्यूरो सर्जन डॉ. के.के. बंसल से माही संदेश पत्रिका के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की विशेष बातचीत...

राजस्थान के श्रीगंगानगर के सादुलशहर में जन्मे डॉ. के.के.बंसल बचपन से ही प्रतिभाशील थे। पिता की किराने की दुकान थी। मध्यमवर्गीय परिवार से ताल्लुक रखने वाले डॉ. बंसल के सपने बहुत बड़े थे। कहते हैं न कि जब कोई प्रतिभा बड़ा स्वप्न देखती है तो वह जरूर साकार होता है। आज डॉ. बंसल देश के जाने-माने न्यूरो सर्जन हैं और विदेशों में भी इनके काम के चर्चे हैं।

सफल न्यूरो सर्जन बनने का सफर कैसे पूरा हुआ

डॉ. के.के. बंसल कहते हैं कि 11वीं के बाद आगे की पढ़ाई के लिए श्रीगंगानगर आना-जाना किया, इसके बाद वर्ष 1984-85 में बीएससी में एडमिशन लिया इस दौरान पीएमटी की परीक्षा दी लेकिन प्रथम प्रयास में सफलता नहीं हाथ लगी, फिर दूसरी बार प्रयास किया और पीएमटी में चयन हुआ और बीकानेर के

मिर्गी के दौरे छुपाएं नहीं बताएं...

मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई की, इसके बाद एसएमएस के जनरल सर्जरी विभाग में एमएस की पढ़ाई की।

हमेशा से मन था कि मैं ब्रेन का सर्जन बनूं, क्योंकि एक तो मन था दूसरा कारण यह था कि ब्रेन सर्जन की संख्या देश में बहुत कम थी। इसके बाद न्यूरो सर्जरी में नेशनल लेवल की परीक्षा पास की जिसमें देश भर से 10 से 12 चिकित्सकों का चयन किया गया, चयन के बाद लखनऊ में न्यूरो सर्जन के रूप में विशेषज्ञता हासिल की।

सफलता की कहानी कहती डॉ. बंसल की कार्यशैली

डॉ. बसंल आगे कहते हैं कि पढ़ाई के दौरान आर्थिक रूप से इतने मजबूत नहीं थे, पढ़ाई के दौरान ही मैंने बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाया, न्यूरो सर्जरी में विशेषज्ञता हासिल करने के बाद इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल में पेपर पब्लिश हुए। वर्ष 2003 के दौरान जापान में ट्रेनिंग के लिए चयन हुआ इस ट्रेनिंग की खास बात यह है कि इसमें पूरे विश्व भर से दो से तीन चिकित्सकों का चयन किया जाता है, इसमें माइक्रो सर्जरी, ब्रेन ट्यूमर पर रिसर्च की जाती है। इसके बाद वर्ष 2003 से 2011 तक देहरादून में स्वामी राम द्वारा संचालित मैडिकल कॉलेज में प्रोफेसर न्यूरो सर्जरी के रूप में काम किया, अभी वर्तमान में वर्ष 2012 से नारायणा अस्पताल में सीनियर न्यूरो सर्जन के रूप में कार्यरत हैं।

...शेष पृष्ठ 5 पर

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

v v v

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन **(98874-09303)**

v v v

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

v v v

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*
नित्या शुक्ला*
मधु गुप्ता*
वंदना शर्मा*
नीरा जैन*

v v v

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

v v v

ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) रमन सैनी* **9717039404**

v v v

संवाददाता ईशा चौधरी*
दीपक कृष्ण नंदन*
श्री राम शर्मा*
विनोद चौधरी*

v v v

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

v v v

बिजनेस हैड अनुराग सोनी* **9828198745**

v v v

मार्केटिंग सलाहकार अनिल कुमार शर्मा*

v v v

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*
अजय शर्मा **(8368443640)**

v v v

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक* बालकृष्ण शर्मा*
डॉ. रश्मि शर्मा* डॉ. मीना शर्मा*
डॉ. नीति मिश्रा* प्रकाश चन्द शर्मा*

v v v

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

v v v

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

v v v

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

पार्टी और जाति नहीं काम देखकर दें वोट

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश मासिक पत्रिका का सफर अप्रैल 2018 में आरंभ हुआ था, आज अप्रैल 2019 में पत्रिका के प्रकाशन को एक वर्ष हो गया है, हमें पाठकों, लेखकों का अपार समर्थन मिल रहा है, सब कुछ इतना आसान नहीं था लेकिन आपके भरोसे ने हमारी राह न केवल आसान की बल्कि इस प्रतिस्पर्धा के युग में हमें सफलता के पथ पर अग्रसर किया है। मासिक पत्रिका का पहला आधार उसके पाठक व लेखक होते हैं, हमें खुशी है कि जयपुर, राजस्थान से प्रकाशित माही संदेश पत्रिका न केवल राजस्थान बल्कि मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र, गुजरात, छत्तीसगढ़, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, असम, बिहार आदि राज्यों में पाठक व विशेष लेखक वर्ग तक पहुंच रही है। यूं ही आपका साथ हमारे साथ अनवरत रूप से बना रहे। अब हमारे सामने लोकसभा के चुनाव हैं अधिकांश नेता जननेता कम अभिनेता ज्यादा बने हुए हैं, खैर सब जानते हैं कि चुनाव में बस घोषणाओं का आश्वासन दिया जाता है जब सत्ता में आते हैं तो घोषणाएं बस हवा में हवा हो जाती हैं, कुछ कागजों में दम तोड़ देती हैं, जनता अपनी बात जिस दिन स्वयं करने लग जाएगी, उस दिन यह राजनीति जनता के आगे घुटनों के बल खड़ी नजर आएगी, हम क्यों अपना स्वार्थ देखते हैं हम क्यों नहीं चाहते कि देश बदले, हम क्यों नहीं चाहते कि भगतसिंह हमारे घर से निकले पड़ौसी के घर से क्यों? इस बार पार्टी और जाति को नहीं सही उम्मीदवार को वोट दें, देश के लिए इतना तो हम कर ही सकते हैं...

शेष फिर.....

एक नज़र यहां भी

जन संदेश
अहिंसा आतंकवाद और गांधी पुनरावलोकन — **प्रो. शोभा जैन** — 6

जीवन संदेश
स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी और क्रांतिकारी वीर बाबूराव शेडमाके को सादर सेवा जोहर — **डॉ. सूर्या बाली 'सूरज धूर्वे'** — 8

चुनाव विशेष
बज चुका है चुनाव का बिगुल — **अरविंद पांडेय** — 10

व्यक्ति विशेष
समाज के लिए रहे हमेशा तत्पर — **प्रगति शर्मा** — 12

मन का कोना
हर मोर्चे पर तैयार रहतीं हम फौजी पत्नियां — **रंजीता अशेष** — 13

करियर संदेश
प्रबंधन क्षेत्र में करियर का निर्माण एमबीए — **डॉ. श्रेया भार्गव** — 14

मन की बात
आरंभ में बेवजह लिखा फिर गज़ल कही- तनेश — 16

नमन
हकु शाह - एक मूर्धन्य भारतीय चित्रकार का निधन — 17

रंगमंच
हम रंगमंच को कितना जानते हैं? — **दीप्ति पाठक** — 18

काव्य कलम — 19

दिल की बात
आखरी मुलाकात — **इशिका** — 20

गतिविधियां — 21

उपन्यास
उड़ती चील का अण्डा — **डॉ. मदन लाल शर्मा** — 23

नारी संदेश
मेहनत, आत्मविश्वास और किस्मत से नसीब हुआ यह पल- योगिता 'जीनत' — **रोहित कृष्ण नंदन** — 24

सिनेमा संदेश
'बूझ मेरा क्या नाम रे' शमशाद बेगम — **शिशिर कृष्ण शर्मा** — 26

आवरण चित्र-अरुण मजूमदार*
बहुप्रतिष्ठित कंपनी में अस्सिस्टेंट मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। पिछले नौ वर्ष से शौकिया रूप से फोटोग्राफी कर रहे हैं।

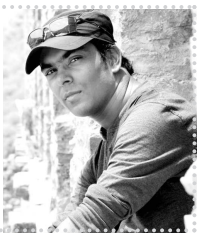

पाठक संदेश

माही संदेश पत्रिका के मार्च अंक आवरण चित्र में पुलवामा शहीदों को नमन, ये बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा, मन को अच्छा लगा, जब से माही संदेश पत्रिका पढ़ना आरंभ किया है तब से हर माह इसके अंक की प्रतीक्षा रहती है। माही संदेश को सफल एक वर्ष पूर्ण होने पर शुभकामनाएं

कविता जैन- *कोटा, (राजस्थान)*

माही संदेश के मार्च अंक में शहीद पुनीत नाथ दत्त के बारे में पढ़कर आंख नम हो गईं, उनकी शहादत को शत-शत नमन, हाजी इकराम अहमद खान का साक्षात्कार बढ़िया लगा, हर बार की तरह पापा की खुशबू लौट कर आई भाग-3 मन को भा गया, क्योंकि डर के आगे वो हैं में ममता पंडित जी को पढ़ना अच्छा लगा। हवामहल और दिल्ली दरबार स्तंभ रोचक लगे, बेमिसाल अभिनेता इफ्तेखार के बारे शिशिर कृष्ण शर्मा जी का आलेख पढ़ना सुखद अनुभव रहा।

पूजा शर्मा -
सहारनपुर (उत्तर प्रदेश)

विज्ञापन

ऐसे उम्मीदवार जो अपना उत्तम कला कौशल रखते हों मगर आगे बढ़ने का मुकाम नहीं मिला, सभी से साग्रह निवेदन और आमंत्रण है कि अपनी हस्तलिखित या टंकित प्रोफाइल ई-मेल करें और आपको ग्रूम-अप करने का एक अवसर हमें अवश्य दें ।

मेरा अनुभव और संपर्क निश्चित रूप से आपके हित में वृद्धि करने के साथ-साथ जीवन की असलियत से भी रूबरू कराकर आज के मायने बेहतर और कमाऊ बनने में मददगार होगा।

royalensign105@gmail.com
or fix an appointment calling me on
7877756814

...क्रमशः पृष्ठ 2 से

ट्यूमर होने का मतलब यह नहीं है कि ज़िन्दगी खत्म, इलाज संभव है

हैड इंजरी में बचाव किस हद तक संभव है?

वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डॉ. के.के. बंसल का कहना है कि मेडिकल की दुनिया में हैड इंजरी एक मात्र ऐसी बीमारी है जिसका बचाव किया जा सकता है। हैड इंजरी सड़क दुर्घटनाओं में या फिर कहीं फिसलन में होने का डर है, इसका सीधा सा उपाय है कि बाइक ड्राइव करते वक्त पुलिस के डर से नहीं बल्कि अपनी जान के बचाव के लिए हेलमेट पहनें, वहीं घरों के बाथरूम फिसलन वाले न हों, हैड इंजरी मेडिकल की दुनिया में 100 प्रतिशत प्रिवेंटिव है, वहीं दूसरा मिथ लोगों में यह भी है कि ब्रेन में होने वाले ट्यूमर कैंसर के होते हैं, जबकि 40 प्रतिशत ब्रेन ट्यूमर नॉन कैंसर होते हैं, ट्यूमर होने का मतलब यह नहीं है कि अब जिंदगी खत्म है, ब्रेन ट्यूमर अब पूरी तरह से क्योरबल है। ब्रेन हेमरेज से बचना है तो ब्लड प्रेशर की मेडिसिन कभी लेना बंद न करें।

मिर्गी के दौरे आजकल बढ़ रहे हैं, इसकी रोकथाम कैसे की जा सकती है?

अक्सर देखा जाता है कि लोग मिर्गी के दौरे के बारे में जागरूक नहीं हैं, युवा अवस्था में जब किसी युवा को मिर्गी की परेशानी होती है तो परिवार वाले इसके परामर्श के बारे में बहुत कम ध्यान देते हैं। डॉ. बंसल कहते हैं कि मिर्गी को छुआछूत की बीमारी न मानें, समय पर इसका इलाज कराएं, मिर्गी के दौरे छुपाएं नहीं बताएं।

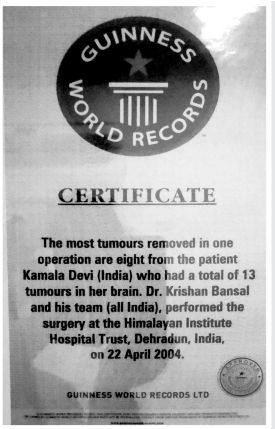

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हैं डॉ. बंसल

भारत की मरीज कमला देवी जिनके सिर में 13 ट्यूमर थे, डॉ. के.के. बंसल ने 22 अप्रैल 2004 को अपनी टीम के साथ देहरादून के हिमालयन इंस्टीट्यूट हॉस्पिटल ट्रस्ट में जटिल ऑपरेशन कर एक ही बार में 8 ट्यूमर सफलतापूर्वक ऑपरेट किए, इनके इस सफल काम के लिए इन्हें गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में शुमार किया गया।

आपकी अभिरुचि और आपके परिवार के बारे में बताईए

ट्रेवलिंग करने और संगीत सुनने का शौक रखने वाले डॉ. बंसल बहुत अच्छी कविताएं भी लिखते हैं, कर्म को ही पूजा मानने वाले डॉ. के.के. बंसल आगे कहते हैं कि अगर आप अपने काम को शिद्दत से करते हैं तो आप हमेशा सफल होते हैं। परिवार में पिता ओमप्रकाश बंसल, मां रामदुलारी हैं, पत्नी डॉ. सविता बंसल फॉर्टिस हॉस्पिटल में गायनोकोलॉजिस्ट के रूप में कार्यरत हैं बेटा यशांक आईआईटी फाइनल ईयर में है तथा बिटिया हेमाक्षी 10वीं कक्षा में अध्ययनरत है।

अहिंसा आतंकवाद और गांधी पुनरावलोकन

प्रो. शोभा जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

युद्ध केवल मनुष्यों तक ही सीमित है। पशु बस अपना शिकार करते हैं और बाकी सब वैसा का वैसा ही छोड़ देते हैं, पर मानव प्राचीन काल से ही युद्ध में निमग्न है क्योंकि मनुष्य का जीवन तर्क पर आधारित है। मीडिया के शोरगुल में हम सभी युद्धोन्मादी बन गए हैं।

'अहिंसा' क्या सिर्फ एक शब्द है, जिसे बौद्धिक सेमिनारों और धार्मिक जलसों में सुविधानुसार इस्तेमाल किया जाए? यह प्रश्न वर्तमान संदर्भ में विमर्श का केंद्र है क्योंकि परिस्थितियां कुछ और ही संकेत दे रही हैं। ऐसा कार्य जिसमें लक्ष्य को पाने के लिए मानवीय मूलों को भुला दिया जाता है आतंकवाद कहलाता है जिससे हमारा देश जूझ रहा है, गौरतलब है आतंकवादियों की रक्त पिपासा से देश का कोई हिस्सा अछूता नहीं रह गया है। भारत एक विशाल देश है। पिछले चार दशक से 'छद्म युद्ध' के सहारे हमारा खून बहा रहा है। पुलवामा में हुए आत्मघाती हमले ने एक बार फिर कश्मीर की समस्या पर सवाल खड़ा कर दिया है। आतंकवाद पर अपने-अपने वोट बैंक की सियासत की जा रही है। ऐसी सियासत आतंकवाद से भी ज्यादा खतरनाक है। उरी के बाद सबसे बड़ा हमला दक्षिण कश्मीर के पुलवामा में हुए आतंकी हमले ने हर किसी की आंखें नम कर दी हैं जिसके भीषण विस्फोट से केवल जवानों के शव बुरी तरह से क्षत-विक्षत नहीं हुए हैं पूरा देश सदमे में है। इसे चुनावी मुद्दे के रूप में राष्ट्रवाद की सुगबुगाहट का नाम भी दिया जा रहा है। जिस देश में आतंकवाद को अहिंसा के सिद्धांतों की रोशनी में देखना चाहिए, वहां उन्माद है, सियासत है या सन्नाटा है। और हम युद्ध की मानसिक तैयारी में जुट गये। क्या हम कल्पना कर सकते हैं कि भारत-पाकिस्तान का यह युद्ध केवल दो देशों में ही नहीं रह जाएगा? क्या इसके अन्य विकल्प पर बात नहीं की जाए। पौराणिक कथाओं के अनुसार भी महाभारत के युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले भगवान श्रीकृष्ण का एक नाम रणछोड़ (युद्ध से भागने वाला) भी है, इसके पीछे का विचार यह है की शांति हमेशा युद्ध से अच्छी होती है। गौरतलब है युद्ध केवल मनुष्यों तक ही सीमित है। पशु बस अपना शिकार करते हैं और बाकी सब वैसा का वैसा ही छोड़ देते हैं। पर मानव प्राचीन काल से ही युद्ध में निमग्न है क्योंकि मनुष्य का जीवन तर्क पर आधारित है। मीडिया के शोरगुल में हम सभी युद्धोन्मादी बन गए हैं। उपर्युक्त दृष्टान्त देश के भीतर जंग के लिए शोर मचा रहे सभी राष्ट्रवादियों के लिए है, क्योंकि भारत और पाकिस्तान के बीच किसी भी वक्त जंग की संभावना कोई अच्छी खबर नहीं हो सकती। आतंकवाद का सफाया यदि दंड (युद्ध) के जरिए संभव हो पाता तो आज तक हजारों आतंकी पुलिस और सैनिक कार्रवाइयों के माध्यम से मौत के घाट उतारे जा चुके हैं, आतंकवाद पूरी दुनिया से खत्म हो चुका होता। कठिन जरूर है आतंकवाद पर काबू पाना, लेकिन असंभव कदापि नहीं है। हमें नहीं भूलना चाहिए कि समझ के द्वारा किया गया सबसे बुरा कार्य युद्ध ही है और एक सीमा के भीतर ही किसी तर्क को तर्क संगत सिद्ध किया जा सकता है। इस तरह की हिंसा से न सिर्फ

शारीरिक आतंकवाद होगा बल्कि भावी सांस्कृतिक सामाजिक और मानसिक आतंकवाद भी जन्म लेगा। हमारा प्रयास यही हो कि किसी भी परिस्थिति में युद्ध की स्थिति निर्मित न हो। अहिंसा के माध्यम से ही आतंकवाद की अंतरराष्ट्रीय समस्या पर विजय प्राप्त करने का प्रयास सार्थक करना अपना उद्देश्य हो। यह अब चरम की स्थिति है एक निर्णायक मोड़। जिस देश के पास महावीर हैं, बुद्ध हैं, नानक हैं, कृष्ण हैं, कबीर हैं, अशोक और गांधी हैं। हम अहिंसा की विरासत की बेपनाह दौलत से भरे-पूरे समाज हैं किन्तु विष से विष को खत्म करने के चलते हम केवल वातावरण में विष की मात्रा ही बढ़ाएंगे जबकि आम तौर पर जब भी राजनीति की बात होती है या कोई ऐसा परिदृश्य होता है तब यहां कोई भी पार्टी या सरकार महात्मा गांधी की अहिंसा का प्रचार करना नहीं भूलती। लेकिन गांधी के विचारों का लाभ उठाने की जो हिम्मत, कुव्वत और इच्छा जमीनी स्तर पर दिखनी चाहिए थी, वह सिरे से नदारद ही रहती है कहने का अर्थ परीक्षा की घड़ी में गौतम-गांधी सिरे से गायब है सभी आक्रोश से भरे माहौल को सुलगाने की फिराक में लगे रहते हैं वो भी जिन्हें इस विषय का न तो इतिहास पता है न भूगोल। विशेषकर युवा, उन्हें आक्रोश से नहीं होश से इस संवेदनशील मुद्दे को सुलझाने के लिए गाँधी नीति को समझना चाहिए। केवल नारेबाजी करने से या तोपें चलाने से जंग नहीं जीती जाती। यह नहीं भूलना चाहिए कि इस तरह के राजनीतिक आतंक से किसी समस्या का समाधान मिलने वाला नहीं क्योंकि किसी ने खूब लिखा है -'जंग लड़ी जाती है, जीती नहीं जाती कभी। जंग पैगाम अमन का नहीं लाती है कभी। क्या जंग जरूरी है, सरहद पर हिफाजत के लिए? क्या जंग जरूरी है, सत्ता-और-सियासत के लिए?' इस

तरह से राजनीति का खामियाजा आम लोगों को भुगतना पड़ रहा है। अहिंसा का अर्थ यह कतई न समझा जाय कि इसका पालन करने वाले गांधी के अनुयायी मान लिए जाएंगे, अहिंसा एक प्रकृति प्रदत्त तत्व है। किसी भी स्तर की समस्या के समाधान का एक अनोखा विकल्प। हमें नहीं भूलना चाहिए कि अमेरिका जैसा ताकतवर मुल्क भी आतंकवाद के सामने बगलें झांक रहा है। ऐसा सिर्फ इसलिए है क्योंकि हिंसा का जवाब हिंसा हो ही नहीं सकता। थोड़े से लोगों को ही और थोड़े समय के लिए ही युद्ध उचित लगता है। तभी, इस ग्रह पर युद्ध अटल हो जाता है। युद्ध कभी भी किसी समस्या का हल नहीं बन सकता। भारत ने पाकिस्तान के साथ तीन युद्ध और फिर करगिल की जंग लड़ी है। अभी जंग जरूरी नहीं है। भारत को इस सच को भी समझना है कि लाखों-करोड़ का जंगी साजो-सामान उसकी वास्तविक जरूरतों से उसे कितना पीछे धकेल रहा है। अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का अखबारों में छपा बयान, जिसमें उन्होंने उरी के हमलों और आतंक को प्रश्रय देने की निंदा तो की, लेकिन साथ ही यह भी कहा है कि 'इस वक्त दुनिया का कोई भी बड़ा देश किसी दूसरे देश पर युद्ध नहीं कर सकता है' पाकिस्तान की तुलना में भारत बहुत बड़ा देश है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर उसकी एक साख है। भारत के पास विश्व बाजार और आर्थिक महाशक्ति बनने की अपार संभावनाएं हैं। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के विवादास्पद बयान को तूल देना हमारी प्राथमिकता नहीं यह महज शब्दों का जाल है जिसका उद्देश्य केवल व्यवस्था को विचलित कर पथविमुख करना है ऐसा करके हम उन्हीं के मनसूबों को सर चढ़ा रहे हैं चाणक्य के देश में इस तरह की नासमझी अपेक्षित नहीं। हम उनमें से भी नहीं है जिनमें तथाकथित लिबरल अफजल गुरु को माफी देने की मांग करते हैं, किन्तु एकजुट रण नीति बनाकर अगर किसी समस्या की जड़ को काट दिया जाय तो दोबारा इस तरह का पेड़ जन्म नहीं ले सकेगा। 'युद्ध' करना केवल तने को काटने जैसा है जो उस पेड़ को दोबारा खड़ा कर देगा। हमारी अपेक्षाएं केंद्र सरकार से भविष्य में ऐसे आतंकी हमलों को रोकने के लिए कड़े कदम उठाने की है पाकिस्तान को जवाब दें लेकिन उसकी भाषा में नहीं अपनी भाषा में यही समझदारी का सूचक है। गौर कीजिए, क्या यह केवल भारत और पाकिस्तान का ही युद्ध होगा? यह केवल भारत को उसकी विकास यात्रा से भटकाने का छलावा से अधिक कुछ नहीं। युद्ध केवल एक लंबे समय तक चलने वाला और युगों तक अपना प्रभाव छोड़ने वाला आक्रामक कृत्य है इससे अधिक कुछ भी नहीं जिसके परिणाम सदा विस्फोटक ही रहे हैं इसके लिए इतिहास पर एक बार पुनरावलोकन जरुर किया जाना चाहिए। गीतकार गोपाल दास 'नीरज' के शब्दों में-'अब तो मजहब कोई ऐसा भी चलाया जाए, जिसमें इंसानों को इंसान बनाया जाए। जिसकी खुशबू से महक जाय पड़ोसी का घर भी, फूल इस किस्म का हर सिम्त खिलाया जाए, प्यार का खून हुआ क्यों, ये समझने के लिए, हर अँधेरे को उजाले में बुलाया जाए।'

स्वतंत्रता संग्राम के अमर सेनानी और क्रांतिकारी वीर
बाबूराव शेडमाके को सादर सेवा जोहर

डॉ. सूर्या बाली 'सूरज धूर्वे'
प्रोफेसर, एम्स भोपाल

कहते हैं अगर मानव जीवन मिले तो उसे मानव की तरह ही जीना चाहिए चाहे वो जीवन कुछ ही दिनों का क्यूँ न हो। कुछ लोग पूरी जिंदगी पशुओं की तरह जीकर गुजार देते हैं और कुछ लोग कम उम्र में ही वीरता पूर्ण और सम्मानजनक जीवन जीकर इस संसार से विदा ले लेते हैं। ऐसे महापुरुष जो देश और समाज के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान कर देते हैं उन्हे ही अमर शहीद का दर्जा प्राप्त होता है। जिन पर युगों-युगों तक देश और समाज गर्व करता रहता है। किसी ने सही ही कहा है कि 'शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा'। ऐसे ही एक वीर शहीद की पुण्य जन्म तिथि आज है और पूरा गोंडवाना आज उस वीर शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा है।

ये अलग बात है की जो सम्मान और श्रेय भारत के अन्य शहीदों को मिला वो इस महान योद्धा को कभी नसीब नहीं हुआ और उनके पराक्रम और वीरता को जातिवादी और सामंती सोच वाले इतिहासकारों द्वारा कभी आम जनता तक लाया ही नहीं गया। ऐसे ही एक महान योद्धा और क्रांतिकारी शहीद जिनका नाम बाबुराव शेडमाके था। सन् 1857 के क्रांति के नायक के रूप में मंगल पांडे को तो सभी जानते हैं लेकिन उनसे भी बेहतर कार्य करने वाले शहीद बाबुराव शेडमाके को शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। आइये आज उस महान स्वतंत्र सेनानी के बारे में कुछ खास बातें जानते हैं और अपना श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

बाबुराव शेडमाके का जन्म 12 मार्च सन् 1833 को गोंडवाना साम्राज्य के चांदागढ़ रियासत (संप्रति जिला चंद्रपुर, महाराष्ट्र) के मोलमपल्ली गांव में हुआ था। आपके पिता का नाम पूलाईसुर बाबू था जिन्हें लोग पुलेश्वर बापू के नाम से भी जानते थे वे उस क्षेत्र के काफी प्रभावशाली जमींदार हुआ करते थे जिनके अंतर्गत 24 गांव आते थे। बाबू राव के माता का नाम जुरजा कुंवर था जो बहुत ही कोया पुनेमी महिला थी और गोंडी भाषा की अच्छी जानकार थी।

उनकी प्रारंभिक शिक्षा और पालन पोषण मां जुरजा कुंवर के द्वारा घर में ही संपन्न हुई और बाद में सात साल की उम्र में उन्हें मोलम पल्ली के निकट के गोटूल में शिक्षा के लिए भेजा गया। जहां पर उन्होंने पारंपरिक ढंग से गोंडी भाषा के साथ साथ तेलगु और हिंदी की शिक्षा मिली। गोटूल में ही उन्हें मल्ल युद्ध, घुड़सवारी, तीर कमान चलाने की शिक्षा के साथ साथ ही गायन और नृत्य की शिक्षा भी मिली। बाद में उनके पिता को जब महसूस हुआ की इस देश में अंग्रेजी शिक्षा जरूरी है तब उन्होंने बाबुराव को गोटूल से निकालकर रायपुर के अंग्रेजी माध्यम स्कूल में अंग्रेजी शिक्षा के लिए भेजा जहां से बाबुराव ने अंग्रेजी का अध्ययन किया।

बारहवीं की शिक्षा प्राप्त करने बाद बाबुराव वापस चंद्रपुर चले आए और परिवार के ज़मींदारी में हाथ बंटाने लगे। सन् 1851 में बाबुराव का विवाह गोंडी परंपराओं के अनुसार राजकुंवर नामक गोंड कन्या से संपन्न हुआ था। राजकुमारी राजकुंवर संप्रति तेलंगाना राज्य के आदिलाबाद जिले के चेन्नुर के मड़ावी

राजघराने से थीं। शादी के तीन साल तक बाबुराव अपनी जमींदारी व्यवस्था को संभालते रहे और आस-पास के सभी किसानों की मदद भी करते रहे। इसी दौरान भारत में ब्रिटिश सरकार अपना दायरा मध्य भारत की तरफ बढ़ा रही थी और गोंडवाना की सीमा में प्रवेश कर रही थी। जब पूरा भारत अंग्रेजों की गुलामी कर रहा था तब गोंडवाना अपना मस्तक ऊंचा किए गर्व से अंग्रेजों का विरोध कर रहा था।

जब अंग्रेजों को अपने मिशन में सफलता नहीं मिली तब उन्होंने भारत के स्थानीय राजाओं और नवाबों से गोंडवाना पर विजय प्राप्त करने के लिए सहायता मांगी। तब अंग्रेजों को उत्तर और पूरब से राजपूतों का, दक्षिण से नबाबों का, पश्चिम से मराठाओं का साथ मिला और इस तरह अंग्रेजों ने गोंडवाना पर अपना कब्जा जमाया।

सन् 1854 में अंग्रेजों ने आर.एस. एलिस को चंद्रपुर का कलेक्टर नियुक्त किया और इस तरह अंग्रेजों ने 1856 तक पूरे गोंडवाना को अपने अधिकार में कर लिया था और स्थानीय गोंड राजाओं और जमींदारों के साथ बहुत ही बेरहमी से पेश आना शुरू कर दिया था। अंग्रेजों ने पूरी तरह से जनजातियों के अधिकारों पर पाबंदी लगा रखा थी और मनमाना कर वसूल करने के साथ जनजातियों के संसाधनों जैसे जल, जंगल, जमीन का भरपूर दोहन भी कर रहे थे। ऐसी स्थिति में समाज की स्थित बहुत दयनीय होती जा रही थी। समाज और देश से अंग्रेजों को भगाने के लिए बाबुराव शेडमाके ने कमर कस ली और और महज 24 साल की उम्र में 24 सितंबर 1857 को मात्र 500 नौजवानों को लेकर 'जंगोम सेना' की स्थापना करके अंग्रेजों के विरुद्ध बिगुल बाजा दिया। इसी समय पूरा देश अंग्रेजों के खिलाफ स्वतन्त्रता संग्राम के आंदोलन में कूद पढ़ा था।

उन्हें पहली सफलता तब मिली जब उनकी सेना ने राजगढ़ क्षेत्र को अंग्रेजों के कब्जे से मुक्त कराया। इस हार से ब्रिटिश कलेक्टर मि. क्रिक्टन को पागल कर दिया तब उसने चंद्रपुर से ब्रिटिश सेना की दूसरी टुकड़ी राजगढ़ भेजी लेकिन वहां पहुंचने से पहले ही चंद्रपुर शहर के पास स्थित घोसरी गांव के पास हुये युद्ध में बाबुराव ने अपने साथियों के साथ बड़ी मात्रा में अंग्रेज सिपाहियों को खत्म कर दिया। मि. क्रिक्टन ने तीसरी बार फिर से सैन्य दल युद्ध के लिए भेजा जिसका सामना संगनापुर और बामनपेट में बाबुराव की जंगोम सेना से हुआ और ब्रिटिश सेना को फिर से मुंह की खानी पड़ी।

लगातार अंग्रेजों को पराजित करने के कारण बाबुराव शेडमाके का मनोबल और बढ़ गया जिसके फलस्वरूप उन्होंने 29 अप्रैल 1858 को चिंचगुडी स्थित अंग्रेजों के टेलीफोन शिविर पर आक्रमण कर दिया. इस आक्रमण में टेलीग्राफ ओपरेटर्स मि. हॉल और मि.गार्टलैंड मारे गए जबकि मि. पीटर वहां से भागने में कामयाब हो गया। मि. पीटर ने चंद्रपुर जाकर मि. क्रिक्टन को पूरी घटना की जानकारी दी।

अब अंग्रेजों के लिए बाबुराव असहनीय हो गए थे। इसी समय एक और जमींदार व्यंकट गोंड भी बाबुराव के साथ हो लिए जिससे अंग्रेजों को और परेशानी का सामना करना पड़ा। लंदन से रानी विक्टोरिया का आदेश मिला कि इन दोनों को किसी भी हालात में नियंत्रित करके ठिकाने लगाया जाये और मि. क्रिक्टन के साथ एक और अंग्रेज अधिकारी मि. शेक्सपियर को लगाया गया।

कैप्टेन शेक्सपियर ने वीर बाबुराव शेडमाके को पकड़ने के लिए एक चाल चली और अहेरी की राजकुमारी लक्ष्मीबाई को मदद करने के लिए दबाव डाला। बाबुराव शेडमाके और व्यंकट गोंड की रियासत की जमींदारी पाने की लालच और अपनी रियासत को खोने डर के कारण अहेरी की राजकुमारी रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों का साथ देना शुरू कर दिया।

अंग्रेजों के दबाव के कारण अहेरी की राजकुमारी रानी लक्ष्मीबाई ने बाबुराव को खाने पर आमंत्रित किया और फिर धोके से अंग्रेजों को सूचना दे दी और इस तरह अपने ही रिश्तेदार के झांसे में बाबुराव फंस गए और दिनांक 18 सितंबर, 1858 को अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तारी के बाद उन्हें चंडा सेंट्रल जेल लाया गया और 14 साल की सजा सुनाई गयी जिसे बाद में अन्य अभियोग लगाकर फांसी की सजा में बदल दिया गया। 21 अक्टूबर, 1858 को बाबुराव पुलेश्वर शेडमाके को चंडा सेंट्रल जेल परिसर में स्थित पीपल के पेड़ से लटकाकर फांसी दी गयी। अंग्रेजों में बाबुराव का इतना डर था की फांसी के बाद भी उन्हें खौलते हुए चूने के पानी में डालकर रखा गया जिसके पक्का किया जा सके की उनकी मौत पूरी तरह से हो गयी है।

बहुत दुख होता है है कि ऐसे महान पराक्रमी वीर सपूत को भारत के इतिहासकारों ने भुला दिया। अभी कुछ साल पहले गोंडवाना आंदोलन के प्रभाव के चलते भारत सरकार ने इस महान सपूत की याद में भारतीय डाक विभाग द्वारा, उनके जन्मदिन पर (12 मार्च सन 2007) एक विशेष डाक टिकट जारी किया गया है। पूरा गोंडवाना इस वीर क्रांतिकारी के बलिदान को सदियों तक याद रखेगा।

गोंड महाराजा बाबुराव पुलेश्वर शेडमाके के बलिदान को ये राष्ट्र कभी भी नहीं भुला पाएगा जिन्हें 21 अक्टूबर, 1858 को अपने स्वाभिमान को बरकरार रखने के चलते अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया था। मात्र 25 वर्ष की अल्पायु में देश और समाज के लिए बलिदान हो जाने वाले इस वीर को शत्-शत् नमन और सेवा जोहार!

बज चुका है चुनाव का बिगुल

2019 के लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। सारी राजनैतिक पार्टियां चाहे वो राष्ट्रीय हों या क्षेत्रीय सभी ने अपनी कमर कस ली है साथ ही साथ मीडिया बंधु भी चुनाव कवरेज करने के लिए बड़े आतुर हो गए हैं। ये लोकसभा चुनाव 2014 के लोकसभा चुनाव से बिल्कुल अलग है जहां 2014 में एनडीए प्रचंड बहुमत के साथ सत्ता में आया था और तब विपक्ष का पत्ता एकदम साफ था। बहुत सारे वादे इरादे लेकर माननीय नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली राजग सरकार सत्तारूढ़ हुई थी। प्रचंड बहुमत के बावजूद भी कई महत्वपूर्ण मसलों पर वे असफल भी हुए हैं।

अरविंद पाण्डेय
विद्यार्थी- दिल्ली विश्वविद्यालय
परास्नातक गणित (M.Sc.)
निवासी-सिद्धार्थ नगर
(उत्तरप्रदेश)

कई राज्यों की रहेगी महत्वपूर्ण भूमिका

543 लोकसभा सीटों वाले भारत के लोकतंत्र के बादशाह की ताजपोशी उत्तरप्रदेश के सियासी गलियारों वाले 80 लोकसभा सीटों में अधिकाधिक सीट प्राप्त करने पर काफी हद तक निर्भर करता है। उसके बाद आते हैं महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल, बिहार, मध्यप्रदेश व राजस्थान जैसे अन्य राज्य जो इस दावेदारी को सशक्त बनाने में काफी भूमिका निभाते हैं। दक्षिण के राज्यों में क्षेत्रीय पार्टियों का दबदबा शुरू से ही रहा है कभी कभार कांग्रेस व भाजपा जैसी राष्ट्रीय पार्टियों के जादू का सिक्का वहां पर चल पाया है। 42 लोकसभा सीटों वाले पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भी इस बार तृणमूल कांग्रेस की स्थिति 2014 के चुनाव से थोड़ी सी अलग जरूर होगी जैसा की बहुत सारे स्थानीय व निकाय चुनाव में ममता बनर्जी की अगुवाई वाली टीएमसी की हालत पेचीदा हुई है। कुछ दमनकारी शक्तियों ने वहां के वोटर्स व विपक्षी दलों के लोगों पर अत्याचार किया है। वहीं 40 लोकसभा सीटों वाले बिहार में माहौल बदले से नजर आ रहे हैं। भाजपा से गठजोड़ बनाने वाले जदयू को इस बार सीटें ज्यादा मिली हैं व भाजपा ने अपने सीटों कि संख्या में कमी की है, पूर्ववर्ती लोकसभा चुनाव के मुकाबले 48 लोकसभा सीटों वाले महाराष्ट्र में भी अभी देखना काफी दिलचस्प होगा कि भाजपा शिवसेना की जोड़ी कितनी कारगर साबित होती है। जैसा कि राफेल के मुद्दे पर शिवसेना ने भी कांग्रेस के सुर में सुर मिलाकर भाजपा का विरोध किया था व बहुत सारे मुद्दों पर जमकर विरोध किया था।

अब बात करते हैं महागठबंधन की

ये देखना भी दिलचस्प होगा कि चुनाव की तारीखें धीरे धीरे नजदीक आने पर उत्तर प्रदेश में भुआ बबुआ की जोड़ी क्या कांग्रेस के साथ आएगी या चुनाव परिणाम आने पर अपना समीकरण साधेगी। चुनाव में सफलता अगड़ी जाति के वोटबैंक पर निर्भर करती है। इस नए गठबंधन के बनने के बाद इस तरह की चर्चा आम होने लगी है कि 2019 के चुनावों में दलित, जाट, मुसलमान और यादव वोट बैंकों की आखिर कितनी अहमियत होगी।

इस चर्चा के बीच हम अक्सर ये भूल जाने की ग़लती कर बैठते हैं कि उत्तर प्रदेश में बीजेपी की सफलता के लिए अगड़ी जाति यानी सवर्णों का वोटबैंक बेहद महत्वपूर्ण है। कई आकलनों में ये बात सामने आई है कि उत्तर प्रदेश में कुल वोटर्स का 25 से 28 फ़ीसदी हिस्सा अगड़ी जातियों का है जिसमें ब्राह्मणों की संख्या सबसे अधिक है। लंबे वक्त तक प्रदेश की सत्ता पर काबिज रहने वाली कांग्रेस भी अपनी चुनावी सफलता के लिए अगड़ी जाति के वोटबैंक के समर्थन पर निर्भर करती थी। कांग्रेस के बाद राज्य की सत्ता क्षेत्रीय पार्टियों समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के हाथों में रही। साथ ही यहां वक्त के साथ बीजेपी का भी उभार हुआ। फिलहाल प्रदेश में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बीजेपी की ही सरकार है और उनकी चुनावी सफलता काफी हद तक अगड़ी जाति के वोटबैंक के समर्थन पर निर्भर है। इससे पहले मुलायम सिंह के नेतृत्व वाली समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन कर साल 1991 और 1993 में बीजेपी उत्तर प्रदेश में सत्ता का स्वाद चख चुकी है। पर इस बार समीकरण विपरीत हैं ।

बीते कई चुनावों के दौरान सीएसडीएस (सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ डेवलपिंग सोसाइटीज)ने जो सर्वे किए हैं उनके अनुसार लोकसभा चुनावों या विधानसभा चुनावों में बीजेपी का प्रदर्शन अच्छा रहा हो या बुरा, प्रदेश में 50 फ़ीसदी से अधिक अगड़ी जाति के वोट पार्टी के खाते में गए हैं।

2004 और 2009 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी को अगड़ी जाति के 52 फीसदी वोट मिले जबकि 2014 के चुनावों में मत प्रतिशत का ये आंकड़ा बढ़ तक 60 फीसदी तक पहुंचा ।

साल 1996 और 1998 के लोकसभा चुनावों में यानी 11वीं और 12वीं लोकसभा के लिए हुए चुनावों में अगड़ी जाति के 54 फ़ीसदी वोट बीजेपी को मिले। वहीं 1999 के लोकसभा चुनावों में ये मत प्रतिशत बढ़ कर 63 फीसदी हो गया।

2004 और 2009 के लोकसभा चुनावों में बीजेपी को अगड़ी जाति के 52 फ़ीसदी वोट मिले जबकि 2014 के चुनावों में मत प्रतिशत का ये आंकड़ा बढ़ तक 60 फीसदी तक पहुंचा ।

जनता की रोके राह, समय में ताव कहां?

चुनाव भारत के आगामी 5 वर्षों की प्रगति को तो प्रभावित ही करता है साथ ही साथ भविष्य में बहुआयामी नीतियों को प्रभावित करने वाला होगा । अपने कैरियर के अंत बिंदु पर खड़ा जवान ,सीमा की सुरक्षा में व सीमा के अंदर संवेदनशील जगहों पर जवान ,खेतों में खड़ा किसान इस चुनाव को काफी हद तक प्रभावित करेंगे। देश के सामने त्रासदी के रूप में खड़ा आतंकवाद, आंतरिक सुरक्षा का मसला, लाखों लाख आदिवासियों को उनकी स्थायित्व का मसला, बेरोजगारी, शिक्षा,स्वास्थ्य व कृषि सुधार पूरी तरह से चुनाव को प्रभावित करेंगे ...

तो आइए हम सभी विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के महापर्व को काफी धूमधाम से मनायें व भारत के बेहतर भविष्य के लिए अपने वोट की चोट से भारत के और भारत के लोगों के हितों को भूलने वाले लोगों को सत्ता से पदस्थ करें व एक बेहतर भारत के निर्माण के स्वप्न को पूरा करने में अपना समुचित योगदान दें। जैसा कि मेरे आदर्श कवि आदरणीय राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर जी की पंक्तियां इन बातों को चरितार्थ करती हैं....

हुंकारों से महलों की
नींव उखड़ जाती,
सांसों के बल से
ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह,
समय में ताव कहां?
वह जिधर चाहती,
काल उधर ही मुड़ता है।

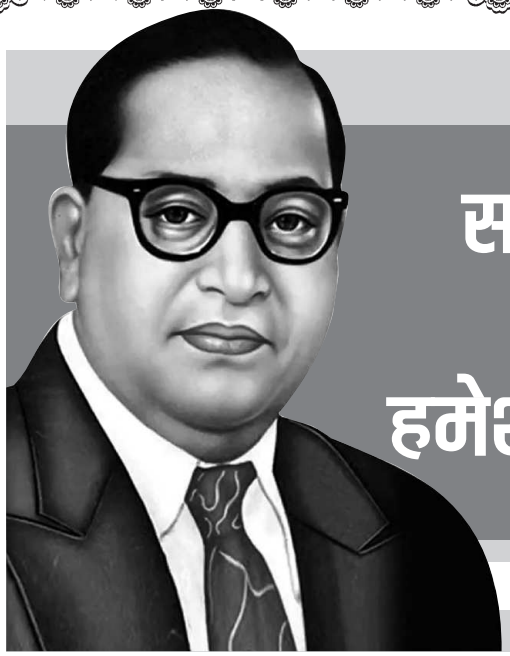

समाज के लिए रहे हमेशा तत्पर

डॉ. भीम राव अंबेडकर

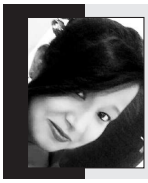

प्रगति शर्मा
झांसी, उत्तर प्रदेश

हम हर साल 14 अप्रैल को भीम राव अंबेडकर जंयती मनाते हैं, इस दिन हमारे देश में सार्वजनिक अवकाश होता है। भीम राव अंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 में सेंट्रल प्रांत के महो क्षेत्र में हुआ था। वर्तमान में ये जगह मध्यप्रदेश राज्य का हिस्सा है। इनका जन्म दलित परिवार में हुआ था, इनके पिता और पूर्वज ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में काम करते थे। भीम राव अंबेडकर ने समाज सुधारक के रूप में काम किया है। इन्होंने सामाजिक, असमानता और जाति व्यवस्था का बहिष्कार कर इन्हें पूर्ण रूप से समाप्त करने में अपना योगदान दिया है।

भीम राव अंबेडकर एक दलित परिवार में पैदा हुए, जिस कारण उन्हें जातिवाद जैसी समस्या का सामना करना पड़ा, उन्हें स्कूल में भी बड़ी जाति वालों के बच्चों से दूर बैठाया जाता था। इन्हें समाज के विशिष्ट वर्गों द्वारा अछूत माना जाता था। इस अपमान जनित व्यवहार ने इन्हें निरर्थक विचारधारा जातिवाद के खिलाफ लड़ने में सहायता की। इन्होंने जातिगत व्यवस्था और भेदभाव के खिलाफ तथा निम्न जाति के लोगों को उनके मूल अधिकार दिलवाने के लिए कड़ा संघर्ष किया, जिस कारण ये दलित समाज में अत्यधिक लोकप्रिय माने जाते हैं और इसी कारण हर साल अंबेडकर जयंती दलितों के द्वारा बड़े ही धूमधाम और उल्लास से मनाई जाती है। इस दिन राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री सहित देश में उच्च रैंक के लोग भारतीय संसद नई दिल्ली में अंबेडकर की मूर्ति को श्रद्धांजलि अर्पित करने जाते हैं।

समाज के लिए इनके योगदान

बाबा साहब अंबेडकर ने कानून और राजनीति विज्ञान में डिग्री हासिल कर अपना एक दल बनाया और उस दल का नाम स्वतंत्र श्रम दल रखा। इन्होंने दलित वर्गों के लिए विधायी विधान सभा में कुछ सीटें सुरक्षित करवाने में भी अपना योगदान दिया। इन्हें स्वतंत्र भारत के संविधान का प्रारूप तैयार करने के लिए उत्तरदायी समिति के अध्यक्ष और स्वतंत्र समिति के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया। इन्होंने बाल विवाह जैसी कुरीतियों का भी बहिष्कार किया। जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए अम्बेडकर के संघर्ष और कठिनाइयों के बारे मे युवा पीढ़ी को बताने के लिए कई पुस्तक फिल्में और नाटक बनाए गए। इन्हीं पुस्तक, फिल्म और नाटक के माध्यम से उनके बहादुरी और संघर्ष के लिए उन्हें आज भी याद किया जाता है। इस जयंती को मनाने का एक कारण यह भी है कि युवाओं को इस दिन डॉ.अंबेडकर के महान कार्यों को याद करने का मौका मिले और उनसे प्रेरणा लेकर प्रोत्साहित हों।

भारत के लोग इस जयंती पर उन्हें उनके महान कार्यों एवं सामाजिक कार्यों में अपना योगदान देने के लिए इन्हें याद करते हैं। हर साल इनके जन्मदिन को बड़े ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस जयंती के अवसर पर देश के हर छोटे-बड़े हिस्सों में विभिन्न प्रकार के समारोह होते हैं। ये भारत गणराज्य के प्रमुख नेताओं और वास्तुकारों मे एक थे। गांधी जी की तरह इन्होंने भी आम जनता को अपने विचारों से प्रभावित किया और कई सामाजिक बुराईयों से लड़ने के लिए उनके साथ काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन्होंने जातिवाद जैसी समस्या से लड़ने के लिए कई आंदोलन भी छेड़े। ये जयंती हमारे महान राजनैतिक नेता के अच्छे कर्मों को याद कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए मनाई जाती है। ये एक इतिहासकार, शिक्षक, लेखक, संपादक, मानव विज्ञानी और वक्ता थे। दलित वर्ग के लोग इनके मिशन में सदैव इनका समर्थन करते थे और इन्हीं समर्थनों के कारण उन्होंने हर दिशा में अनेक सफलताएं प्राप्त कीं।

इन्हें आज भी लोग अपना आदर्श मानते हैं।

वर्ष 1990 में डॉ. भीमराव अंबेडकर के मरणोपरांत उन्हें 'भारत रत्न' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हर मोर्चे पर तैयार रहतीं हम फौजी पत्नियां

रंजीता अशेष
संस्थापिका क्षितिज ग्रुप नई दिल्ली

कहते हैं ना एक फौजी अफसर के साथ रहो तो जिंदगी जीने का नजरिया ही बदल जाता है। एक भारतीय सैनिक के साथ रहकर मेरा भी देश और जीवन के प्रति अलग ही नजरिया हो चुका है। जीवन के उतार-चढ़ाव से होकर मैं काफी व्यावहारिक और सकारात्मक हो गई हूं , या फिर कहा जा सकता है कि मेरे पास और दूसरा कोई विकल्प ही नहीं है। हर दिन नया संघर्ष होता है फौजी जिंदगी में। जी हां ,सच कह रही हूं मैं, किस्से तो बहुत हैं। पर आज एक बात का जिक्र करना चाहूंगी, जब मेरे पति की पोस्टिंग फील्ड में आई थी लेह से भी आगे 4 घंटे ऊपर एक छोटी सी जगह है जहां दिसंबर में तापमान-40 डिग्री सेंटीग्रेड होता है, तब मैं अपने शहर चली गई थी रहने के लिए। क्योंकि ऐसी जगहों पर परिवार को रखना संभव नहीं होता है। हम फौजी पत्नियों के पास तो पति से लड़ाई करने का भी विकल्प नहीं होता है शिकवे-शिकायत, गप्पें, सास की शिकायतें, कुछ नहीं रह जाता बस एक प्रार्थना दिन-रात मन में चलती रहती है कि वह जहां रहें ठीक से रहे।

जिंदगी अच्छे से बसर हो रही थी बच्चों की पीटीएम से लेकर, घर के नल को ठीक कराने तक की जिम्मेदारी मेरी थी। रात में एक बार 9 बजे पति देव से बात हो जाती थी और ऐसी कठिन जगहों पर रहने के कारण नेटवर्क भी नहीं होता है तो सोशल मीडिया तो बहुत दूर की बात है।

नो न्यूज गुड़ न्यूज

रात 9 बजे वाले फोन कॉल के इंतजार में दिन कट रहे थे। कुछ महीने आराम से निकल गए एक बार पूरा दिन निकल गया मेरी पतिदेव से फोन पर बात नहीं हो पाई। मुझे लगा व्यस्त होंगे चलो कल बात कर लेंगे। सोमवार निकल गया, मंगलवार को भी कोई खबर नहीं, धीरे धीरे मेरे मन में उत्साह कम होने लगा । मन कहीं नहीं लग रहा था और दुनिया भर की आशंकाएं मन को घेरने लगी। बुधवार भी निकल गया अब तो 3 दिन से ज्यादा हो गए थे और पतिदेव से बात ना कर पाने की बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी । घबराहट बढ़ने लगी झुंझलाहट होने लगी। गुरुवार भी निकल गया पूरी 5 रातें मैंने आंखों ही आंखों में काटी । सिर्फ एक फोन की घंटी के इंतजार में शुक्रवार सवेरे 5 बजे अचानक फोन की घंटी बजी और मैं भागकर फोन उठाने के लिए गई मन कई तरह की आशंकाओं से घिरा हुआ था। हे भगवान ....सब ठीक हो। जैसे ही फोन उठाया प्यार भरी जानी -पहचानी आवाज सुनाई दी और आंखों से आंसू अपने आप टपकने लगे ।

पतिदेव की आवाज सुनकर मानो जितने देवी देवताओं को जानती थी उन सबको धन्यवाद दिया। इतने में पतिदेव बोले यहां लैंडस्लाइड हो गया था तो 5 दिन से सब कुछ बंद था । इसलिए फोन नहीं कर पाया मेरे आंसू तब भी नहीं थम रहे थे मैंने पतिदेव से कहा पता है तुमको 5 दिन मैंने कैसे बिताए? कुछ हो गया होता तुमको तो? तब भी बड़े हंसते हुए वे बोले कुछ नहीं होगा। यह याद रखो, नो न्यूज़ गुड न्यूज़, अगर कोई खबर नहीं तो समझो मैं ठीक हूं। अगर कुछ हुआ तो मीडिया वाले पहुंच ही जाएंगे। मैं जोर से हंसने लगी मगर उनकी बात ने मेरे दिमाग पर जोरदार असर किया। आसानी से हंसते हुए उन्होंने मुझे लंबे समय के लिए तैयार कर दिया था। यह है जिंदगी जीने का नजरिया सकारात्मक सोच के साथ, बात भी वहीं थी ,हालात भी वही थे बस नजरिया बदल गया था। दो-तीन बार इस तरह की घटनाएं हुईं पर अब घबराहट नहीं होती थी लगता था कोई समाचार नहीं है मतलब ठीक ही होंगे। उस एक घटना ने मेरे जीने का नजरिया ही बदल दिया और ऐसी ही सकारात्मक ऊर्जा के कारण ही हम फौजी पत्नियां अपने मोर्चे पर तैयार रहती हैं जैसे हमारे पति देश के मोर्चे पर डटे रहते हैं।

प्रबंधन क्षेत्र में करियर का निर्माण

डॉ. श्रेया भार्गव
एसोसिएट प्रोफेसर
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी

किसी भी देश के विकास एवं निर्माण में युवा वर्ग का योगदान सर्वाधिक होता है। राजनीति हो या अर्थव्यवस्था, समाज हो या संस्कृति कोई भी जड़वत नहीं है और इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका युवा वर्ग की रही हैं।

आजादी के समय युवा वर्ग के पास करियर के विकल्पों में प्रशासनिक सेवा, सेना, शिक्षा या फिर सरकारी नौकरियां ही थी पर वर्तमान काल में करियर विकल्प में प्रबंधक, इंजीनियर, डॉक्टर, पायलट जैसे विकल्प भी उपलब्ध हो गए हैं।

आज का युवा 10वीं कक्षा के बाद से ही करियर की योजना करने लग जाते हैं और उसी अनुसार तैयारियां भी शुरू कर देते हैं। इसके लिए वे कई बार करियर सलाहकार से विचार-विमर्श भी करते हैं। दुनिया जैसे-जैसे तरक्की की ओर बढ़ता जाएगा और समय बीतता जाएगा वैसे-वैसे करियर के विकल्पों में भी बदलाव आएगा।

प्रबंधन करियर का क्षेत्र बहुत व्यापक हैं और कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जो इससे अछूता हो। जहां तक प्रबंधन क्षेत्र में करियर की बात है तो इवेंट मैनेजमेंट, रूरल मैनेजमेंट, स्पोर्ट्स मैनेजमेंट, एनर्जी मैनेजमेंट, हॉस्पिटल मैनेजमेंट और एडमिस्ट्रेशन, ऑपेशंस मैनेजमेंट, एर्गी बिजनेस मैनेजमेंट, रिटेल मैनेजमेंट, लॉजेस्टिक मैनेजमेंट जैसे नए विकल्पों को आज के युवा पसंद कर रहे हैं जबकि मार्केटिंग मैनेजमेंट, ह्यूमन रिसोर्स मैनेजमेंट, इंटरनेशनल बिजनेस मैनेजमेंट, फाइनेंशियल मैनेजमेंट तो पिछले एक दशक के भी पहले से चल रहे हैं।

मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्टेशन (दो वर्षीय) पाठ्यक्रम मे विद्यार्थी को मैनेजमेंट के सभी विषयों से अवगत कराने के साथ किसी एक चयनित विषय में निपुण बनाया जाता हैं। एमबीए के पहले दो सेमेस्टर में जनरल मैनेजमेंट और स्पेशलाइजड़ विषयों की जानकारी दी जाती है और दूसरे वर्ष में वह अपनी इच्छानुसार स्पेशलाइज्ड विषय को चयनित करता है जो कि उसके करियर लक्ष्य और प्रोफेशनल योग्यताओं पर निर्भर करती हैं।

एमबीए की शिक्षा पूर्ण करने के बाद युवा के पास निम्नलिखित अवसर उपलब्ध हो जाते हैं जिनमें से वह अपनी पसंद और प्राथमिकता के अनुसार चुन सकता है :-

1. प्रोडक्शन मैनेजर
2. ह्यूमन रिसोर्स मैनेजर
3. मार्केटिंग मैनेजर
4. इन्फार्मेशन सिस्टम मैनेजर
5. बिजनेस स्टडीज प्रोफेसर
6. बिजनेस कंसल्टेंट
7. रिसर्च एंड डेवलपमेंट मैनेजर

इसमें प्रोफेशनल्स की शुरुआती साल की तनख्वाह हर महीने रुपये 20,000/- से रुपए 1,00,000 हो सकती हैं।

अंतरराष्ट्रीय श्रमिक संगठन ने अपनी रिपोर्ट 'वर्ल्ड एंप्लायमेंट एंड सोशल आउटलुक ट्रेंड्स 2018' में बताया है कि देश में बेरोजगारी की दर साल 2018 और 2019 में 3.5 रहेगी जिसका मुख्य कारण हैं योग्य ह्यूमन रिसोर्स का अभाव। एक उपक्रम को प्रगति मे रखने के लिए भी एक योग्य और सक्षम मैनेजर की आवश्यकता होती हैं और एक सफल मैनेजर बनने के लिए निम्नलिखित क्षेत्रों पर ध्यान देना जरूरी है :-

सकारात्मक सोच

सकारात्मक सोच वाला व्यक्ति जीवन की विपरीत परिस्थितियों से ना हार कर समाधान की संभावनाओं को विकसित करने में विश्वास रखता है। ऐसे स्वभाव से मन शांत रहता है और काम करने की ऊर्जा रहती हैं। इस सोच वाले व्यक्ति को संघर्षों, मुश्किलों और आपत्तिओं में भी अवसर नजर आते हैं और वह सफलता के शिखर पर पहुंच कर अपने लक्ष्य को प्राप्त करता हैं।

संवेगात्मक बुद्धि

भावनात्मक बुद्धिमत्ता स्वयं की एवं दूसरों की भावनाओं को समझने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की योग्यता है। एक व्यक्ति अपनी भावनात्मक सोच का उपयोग कर सामने वाले व्यक्ति से ज्यादा अच्छी तरह से संवाद कर सकता हैं और ज्यादा बेहतर परिणाम पा सकता हैं।

समय प्रबंधन

कहते हैं समय और लहरें किसी का इंतजार नहीं करतीं जो इनका मूल्य नहीं करता ये उन्हें बर्बाद कर देती हैं। प्रबंधक के रूप में आपके कंधों पर बहुत दायित्व होते है जिन्हें सफलता पूर्वक करने के लिए आपका समय सीमा निश्चित करना बेहद जरूरी हैं। समय सीमा निश्चित करने से आप उस कार्य को पूरा करने के लिए प्राथमिकता के अनुसार अपने कार्य को सूचीबद्ध करेंगे जिससे आत्मनियंत्रण की कला बढ़ेगी और भटकाव पर नियंत्रण रहेगा। इससे आपकी छवि एक कर्तव्यनिष्ट प्रबंधक की बनेंगी।

तनाव सहने की क्षमता

एक प्रबंधक के पास वक्त की कमी, काम का बोझ, उच्च अधिकारी और अधीनस्थ में सामंजस्य रखना और व्यक्तिगत जीवन से संबंधित बहुत से चुनौतियां होती है जिसके कारण कई बार तनाव उत्पन्न हो जाता है। तनाव से एकाग्रचित में कमी आती है जिससे व्यक्ति कई बार सही निर्णय नहीं ले पाता। एक प्रबंधक के रूप में आप को तनाव को नियंत्रित करते हुए निर्णय लेना आना चाहिए ।

सामाजिक कौशल

एक प्रबंधक पर ना केवल अपने विभाग की जिम्मेदारियां होती है बल्कि उसे उच्च अधिकारियों और अधीनस्थ से भी मिल कर कार्य करना होता है और अपने प्रतिबंधों की भी जानकारी रखनी होती है ताकि सही समय पर उचित निर्णय लिए जा सके। इन सभी के लिए उसका सामाजिक तौर से सक्रिय होना जरूरी है।

समुत्थान शक्ति (लचीली सोच)

एक सफल प्रबंधक को अपने उच्च और अधीन अधिकारियों की सहमति से निर्णय लेना चाहिए। अगर निर्णय लेते समय कोई अपना प्रस्ताव या सुझाव रखे तो उनका भली-भांति परीक्षण कर अमल में लाने की कोशिश करें। दूसरों के विचारों का भी स्वागत करें और उन्हें समय और कार्य विशेष से जोड़कर उनकी उपयोगिता और चुनौतियों बताने की कोशिश करें। इससे सभी व्यक्ति प्रबंधक के साथ एक ही स्तर पर मिलकर कार्य करेंगे।

कम्यूनिकेशन कौशल

दूसरों के साथ अपने और उनके विचारों, अनुभवों या किसी सूचना को शेयर करना ही संचार कौशल हैं। आप जो भी कुछ बोलते हैं वह दूसरे को भी उसी संदर्भ में समझ आए तभी आप दूसरे को अपना नजरिया समझा पाएंगे। ऑफिस में हमेशा माप-तोल कर भाषण क प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इससे आपकी छवि बनती है। अत: कठिन और विपरीत स्थितियों में भी धैर्य के साथ रहकर कटु शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जिज्ञासु इच्छा

किसी भी कार्य को करने से पहले उसे अच्छी तरह जानना जरूरी हैं। जितनी ज्यादा आप की जिज्ञासु प्रवृत्ति होगी उतनी ही आपकी जानकारी बढ़ेगी और कार्य को कुशलता से कर पाएँगे।

विश्लेषणी कौशल

एक सफल प्रबंधक वही बन सकता है जो निर्णय लेने से पहले हर पहलू को समझे जिसके लिए आपमें विश्लेषण योग्यता का होना आवश्यक है ताकि किसी भी विकल्प को चुनने से पहले उसे भली-भांति उसके फायदे और सीमाएं जांच कर अंतिम निर्णय ले सके।

आरंभ में बेवजह लिखा फिर गज़ल कही- तनेश

किस तरह साहित्य में कवि के रूप में आपके कदम बढ़े?

एक कविता लिखी थी स्लैम पोएम। उसको एक ओपन माइक में सुनाया, जहाँ सुनने वालों से कुछ खास प्रतिक्रिया नहीं मिली, तो जानने की कोशिश की कि बाकी लोग ऐसा क्या कह रहे हैं। वहाँ नज़्में, ग़ज़लें ये सब पहली बार सुना। तभी इनमें रुचि जाग्रत हुई। आरंभ में बेवजह ही लिखा, फिर ग़ज़ल कही।

आपका परिवार, परिचय और शिक्षा

पापा – मण्डरायल पंचायत समिति में संविदा पे लेखा सहायक हैं
मम्मी – गृहिणी

मैं मूलत: गंगापुर सिटी का रहने वाला हूँ। वहीं पर बारहवीं तक शिक्षा प्राप्त की। अभी एम. एन. आई. टी. से विद्युत अभियांत्रिकी में बी. टेक. कर रहा हूँ।

आपकी नजर में कविता क्या है?

कविता उसकी आँखें हैं, उसके बातें करने का तरीका है। उसके एक-एक चीज़ को नज़ाकत से संभालने की आदत है। उसकी ग़लतियाँ हैं, उसकी ख़ुशबू, उसकी मुस्कुराहट ही कविता है। बस यहाँ 'उसकी' से मतलब कुछ भी हो सकता है, जो महबूब, दोस्त, माँ से लेकर ख़ुदा तक होना मुमकिन है।

भविष्य में स्वयं को कहां देखते हैं?

भविष्य के बारे में सोचना मुझे नहीं आ सका। मुझे इसको लेकर कोई ख़बर नहीं।

क्षितिज ग्रुप में आपने किस तरह प्रथम स्थान हासिल किया?

वहाँ 2 राउंड थे। पहले राउंड में 'ख़्वाब' शब्द काम में लेकर कोई रचना लिखनी थी। दूसरे राउंड में कोई विषय से संबंधित सीमा तय नहीं थी, अपनी कोई भी रचना सुना सकते थे समय- सीमा के अंदर। मैंने उस समय वहाँ अपनी दो ग़ज़लें सुनायीं। लोग अच्छे से जुड़ सके। उनकी मुहब्बत स्कोर में परिणत हुई और मैं जीत पाया।

लघुकथा

मलेच्छ

मम्मी! दादी शांति आंटी को रोज क्यूं डांटती है? नहीं ऐसा तो नहीं है, सिलाई मशीन पे कपड़े सिलते हुए नीतू ने जवाब दिया, ऐसा है! दादी उनसे हर समय दूर रहने, दूर से बात करने को कहती हैं। अभी-अभी वो दादा जी से कह रहीं थीं कि इस मलेच्छ ने मुझे छू लिया। अब दुबारा नहाना पड़ेगा। बेटा, तुम जाकर खेलो और इन सब बातों में ध्यान मत दो। बारह वर्ष के कान्हा की बात को ज्यादा तवज्जो न देते हुए नीतू सिलाई में मगन थी। कान्हा का बालमन अपने प्रश्नों के उत्तर पाने को बेचैन हो उठा। 'मां' बताओ ना, नहीं तो मैं आपको कपड़े सिलने नहीं दूंगा, बेटा मुझे काम कर लेने दो और तुम जाकर अपनी पढ़ाई करो, गुस्साता, खीजता कान्हा दौड़ते हुए कमरे से निकला तो जोर से चीख उठा...मम्मी! जल्दी आओ! देखो दादी मां को क्या हो गया! शांति खून में लथपथ दादी मां को गोद में चिपकाए बैठी थी।

होश आते ही दादी मां शांति की बाहों में अपने आप को देख गुस्से से आग बबूला हो उठीं! दूर हट, मुझे क्यूं छुआ? कोई कुछ कहता इससे पहले, कान्हा तपाक से बोल उठा, देखो शांति आंटी के पैर से कितना खून बह रहा है, कुछ नहीं भैया जी, छोटा सा ही तो घाव है, जल्दी ठीक हो जाएगा, आखिर चोट लगी कैसे? नीतू के प्रश्न के उत्तर का जवाब दिए बगैर शांति आंचल फैलाकर दादी मां की सलामती की दुआ मांगने में व्यस्त थी। भगवान आज पंखा गिरने से मेरी मौत भी हो जाती तो भी मैं इस परिवार का कर्ज नहीं चुका पाती, दादी मां सोच रही थीं, कि अब वो कैसे इस मलेच्छ का कर्ज चुकाएंगीं।

दादी के चेहरे पर पछतावा देख कान्हा उत्तर पा चुका था।

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
भोपाल म.प्र

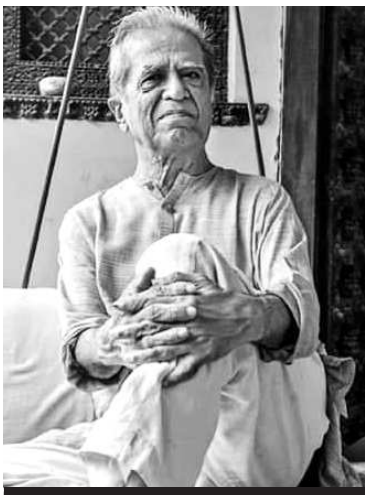

हकु शाह
जन्म : 26 मार्च, 1936
मृत्यु : 21 मार्च, 2019

हकु शाह - एक मूर्धन्य भारतीय चित्रकार का निधन

भारत के विरले चित्रकारों में रहे जिन्होंने पश्चिम की आयातित कला पद्धतियों और विचारों का सीधा विरोध किया। वालोद, जिला सूरत में जन्मे हकु शाह ने एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा से चित्रकला में स्नातकोत्तर की शिक्षा ली। उन्हें एन.एस.बेंद्रे तथा के.जी. सुब्रमण्यम जैसे कला शिक्षक मिले जिन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर तथा नंदलाल बोस की कला और विचारों से परिचित कराने के साथ-साथ आनंद कुमार स्वामी के विशुद्ध भारतीय कला बोध से उनका परिचय कराया। बाद में हकु शाह को गांधी मार्ग और रवीन्द्र नाथ का मानववाद बहुत पसंद आया। जीवन में सत्याग्रह और कला में शांति निकेतन की कलादृष्टि उनका पाथेय बनी। जीवन में सादगी उनका आदर्श रही और कला में मानववाद सहित स्वदेशी प्रतिबद्धता। इस महान भारतीय कलाकार ने चित्रकला को भारतीय लोक, पारम्परिक तथा आदिवासी कलाओं की व्यंजक युक्तियों, रूपकों तथा प्रतीकों से जोड़कर उसे ठोस जमीन दी। उत्तर आधुनिकता के इस दौर में जब बाजार कला को निर्धारित करने लगा है और कला की जातीयता संकट में है, तब हकु शाह की यह सर्जनात्मकता एक तरफ तो प्रेरक का काम करने वाली थी तो दूसरी तरफ बाजारवाद का कड़ा प्रतिरोध करने वाली भी थी क्योंकि उनके यहां कला मांग की नहीं, आत्मान्वेषण की प्रक्रिया से जन्मती थी।

उन्होंने संस्कृतिकर्मी पीयूष दईया से एक बातचीत में कहा था – किसी साधन को अपने काम में बरतने से पहले यह बहुत जरूरी है कि हम उसे उसकी प्रकृति, संभावनाओं और सीमाओं सहित ठीक तरह से जान लें। अगर आप अपने जानने में गम्भीर नहीं हैं तो आप नहीं जान सकेंगे। रचना सामग्री के प्रति आप में भक्ति होनी चाहिए। आत्म तलाश का मतलब है अपने पेट में बच्चा होना। गर्भित अवस्था में होना। यह गर्भ धारण करने जैसा है और आपको इसकी बहुत सजगता और सावधानी से रक्षा करनी होती है।

(मानुष, पृष्ठ 27)

मानुष सीरीज के उनके काम दुनिया के प्राय: सभी विचारकों की दृष्टियों का समागम रहे। ऐसे महान लोकवादी और भारतीय मूल्यों के चित्रकार के निधन से भारतीय कला विपन्न हो गयी है। हम उन्हें अपनी भावभीनी प्रणति देते हैं।

प्रस्तुति- ज्योतिष जोशी

तस्वीर बोल उठी-13

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 अप्रैल) में प्रकाशित किया जाएगा-

तस्वीर बोल उठी-12

रचना भेजने का पता

संपादक माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

तस्वीर बोल उठी-12 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

जाने किस सोच में गुम है
चिड़िया का भी अपना मन है
शाम ढली उदर है खाली
दाना-पानी ही जीवन है।

माला रोहित कृष्ण नंदन
जयपुर (राजस्थान)

हम रंगमंच को कितना जानते हैं?

हम सब इस रंगमंच की कठपुतलियाँ हैं..... यह जुमला हम सब को मुँह जुबानी है, पर आज सवाल ये है कि हम इस रंगमंच को जानते कितना हैं, हम तो शायद यह भी नहीं जानते कि 1961 से लेकर आज तक हर वर्ष 27 मार्च 'विश्व रंगमंच दिवस' के नाम है।

खैर देर आये दुरुस्त आये, मुझे ये सौभाग्य मिल ही गया कि मैं नेटफ्लिक्स,वेबसेरीज और सिनेमा जिनसे हमारा दिन प्रतिदिन का राब्ता है कि जडों को जान सकूँ, रंगमंच को जान सकूँ,और ये तब हुआ जब मेरे शहर ' बीकानेर' में 5 दिवसीय 'बीकानेर थिएटर फेस्ट' आयोजित हुआ और मैं एक रंगमंच कलाकार की जुबानी रंगमंच की जमीनी हकीकत को करीब से जान पायी।

यहां मैं बात कर रही हूँ कलाकार 'अमित सोनी' की जो कि स्वयं रंगमंच से पिछले 7 वर्षों से जुड़े हुए हैं और इस बीकानेर थिएटर फेस्ट के आयोजन में इन्होंने अहम भूमिका निभाई है।

कलाकार अमित सोनी ने बताया कि किस तरह पिछले कुछ वर्षों में यूँ तो थिएटर की तरफ लोगों का रुझान बढ़ा है, और इसमें सोशल मीडिया ने बहुत उम्दा भूमिका निभाई है, इसके बावजूद आज भी कलाकार सिर्फ थिएटर को अपना जीवन यापन का जरिया बनाने में कतराते हैं, क्योंकि वो समझते हैं कि आज भी वो दौर नहीं आया है कि कलाकार सिर्फ थिएटर से अपनी ज़िंदगी गुजरबसर कर सके, इसी के संदर्भ में उन्होंने आगे कहा कि थिएटर बड़े सिनेमा तक पहुँचने का जरिया है सब कलाकारों की पहली मोहब्बत है, और बहुत से बड़े कलाकार हैं जो समय समय पर अपनी पहली मोहब्बत, अपनी जड़ों को सींचते रहते हैं और इसी के चलते वो दिन भी जल्द ही आएगा जब थिएटर को ऑडियंस का पूरा साथ मिलेगा, आगे अमित बताते हैं कि किस तरह भिन्न-भिन्न संस्थाओं ,कला प्रेमियों और कलाकारों द्वारा दिन प्रतिदिन रंगमंच को ज़िन्दा रखने के प्रयास किये जा रहे हैं, युवाओं का रुझान भी थिएटर की तरफ बढ़ रहा है और ये इससे सिद्ध होता है कि इस बार बीकानेर थिएटर फेस्ट में 5 दिन ,14 राज्य, 26 नाट्य प्रस्तुतियों और देशभर से लगभग 400 से ज्यादा कलाकारों ने इसमें हिस्सा लिया, इसीलिए इस बार का थिएटर फेस्ट पिछले 4 साल में सबसे बेहतर रहा।

'बीकानेर थियटर फेस्ट'

'बीकानेर थियटर फेस्ट' संजना कपूर, राजेन्द्र गुप्ता, भानु भारती और अखिलेन्द्र मिश्रा जैसे सितारों से जगमगाता रहा और 'टॉक शोज' के माध्यम से ये कलाकार दर्शकों से रूबरू हुए।

हमारा भी यही मानना है कि अगर इसी तरह सकारात्मक विचारधारा से आगे बढ़ते रहे तो एक दिन थिएटर का अपना एक अलग आयाम होगा।

फिलहाल बीकानेर और जयपुर के सयुंक्त प्रयास जारी हैं जिसमें 'अनुराग कला केंद्र, लोकयन तथा उत्तर पश्चिम रेलवे ललित कला' कलाकारों का हाथ थामे है, और हमारी संस्कृति और रंगमंच को बचाये रखने में हमारा अर्थात एक आम जन का योगदान यह रह सकता है कि हम एक अच्छे दर्शक एवं अच्छे श्रोता बनें,अपने शहर में हो रही रंगमंच की गतिविधियों से अवगत रहें और रंगमंच की प्रस्तुतियों को देखने का वक्त निकालें, सच मानिए इस भाग दौड़ भरी दुनिया में आपको बहुत सुकूं मिलेगा।

दीप्ति पाठक

बीकानेर, राजस्थान

मोहनलाल को मिला राजस्थान गौरव अवॉर्ड-2019

गुलाबी शहर के प्रसिद्ध मेहंदी डिजाइनर मोहनलाल चौहान को युवा संस्कृति संस्था की ओर से आयोजित समारोह में राजस्थान गौरव अवॉर्ड-2019 से नवाजा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कला एवं संस्कृति मंत्री बी.डी. कल्ला थे। गौरतलब है कि चौहान को पूर्व में भी कई अवॉर्ड मिल चुके हैं तथा बॉलीवुड़ की कई प्रसिद्ध अभिनेत्रियां इनकी मेहंदी कला की मुरीद हैं।

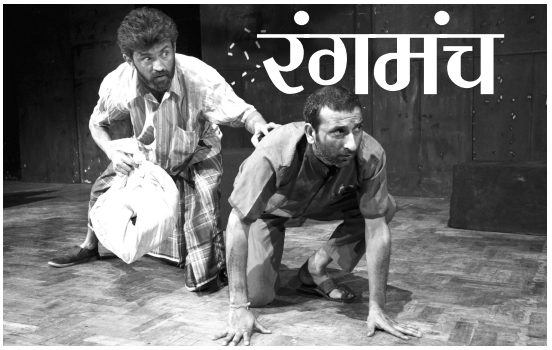

यूनिवर्सल थिएटर अकेडमी द्वारा कला एवं संस्कृति विभाग, राजस्थान सरकार के सहयोग से लघु नाट्य समारोह आयोजित किया गया। जिसमें पहले दिन तीन नाटकों का मंचन हुआ, पहला नाटक घालमेल पार्टी,,जैसे कि नाम से ही आप समझ गए होंगे। जब किसी पार्टी का कोई नेता चुनाव हार जाता है तो विपक्षी पार्टी में जाकर उनसे हाथ मिला लेता है और फिर चुनाव जीतने के बाद जनता पर कोई ध्यान नही दिया जाता, दिन-प्रतिदिन अपराध बढ़ते जा रहे हैं, बस योजनाओं के नाम पर अपने घरों की तिजोरियां भरी जाती हैं। नाटक में पात्रों का अभिनय ठीक रहा ,वाचिक अभिनय और एकाग्रता पर ध्यान देने की आवश्यकता है। गिरिराजशरण अग्रवाल के लिखे नाटक को केशव गुप्ता ने निर्देशित किया।

दूसरा नाटक हुआ 'खुदा हाफिज'

1947 में भारतीय आजादी का जश्न था और विभाजन का दर्द भी,जगह जगह दंगे फसाद हो रहे थे,वहीं एक जगह ,जहां कचरे के ढेर के पास एक आदमी डरा, सहमा अपने आपको को बचाने की खातिर छुप रहा था। तभी गोलियों की आवाजें आती हैं और दूसरा आदमी भी उसी जगह आता है। अब दोनों की बातचीत होती है, एक मुसलमान है और एक हिंदु। शुरू में तो दोनों एक दूसरे से डरते हैं पर धीरे धीरे दोस्ती होती है एक दूसरे को छिपाते अपनी कहानी सांझा करते हैं। फिर दोनों अपने रास्ते निकल जाते हैं इस वादे के साथ कि मौका लगा तो मिलेंगे अच्छा खुदा हाफिज। आखिर इंसानियत को क्या हुआ है क्यों सियासी खेल में हम दुश्मन बन गए। इसी को चरितार्थ करता ये नाटक हमारी संकीर्ण मनोवृत्ति को दर्शाता है। नाटक का निर्देशन हितेश भार्गव ने किया। रंगप्रिया थिएटर सोसाइटी, हिमाचल प्रदेश की प्रस्तुति सराहनीय रही।

विनोद कुमार जोशी
रंगकर्मी, जयपुर

कुर्जां उर्दू दोहे

13-11= 24 मात्राओं में

हिन्दुस्तान में पांच किस्म के सारस और दीगर मुमालिक में सोलह किस्म के सारस पाए जाते हैं, कुर्जां भी इनमें से एक किस्म का सारस है। यह परिंदा सर्दी का मौसम गुजारने के लिए रूस के कजाकिस्तान और मंगोलिया इलाकों से राजस्थान की झीलों और तालाबों में झुंड की शक्ल में पडाव डालता है और माह मार्च में अपने इलाके लिए परवाज करता है। राजस्थानी लोक कथाओं और लोक गीतों में कुर्जां को मुशीर, दोस्त और पैगामरसां का दर्जा हासिल है।

साजन के एहसास से टूटे है हर अंग
कुर्जां मुझ पर डाल दे होली के सब रंग

कुर्जां फिर से पढ़ जरा साजन के जज्बात
खत के आखिर में लिखी आने वाली बात

कुर्जां घड़ियां हिज्र की हो गईं जल कर राख
आने वाला आ गया सावन क्या बैसाख

कुर्जां उनका जिक्र ही भर देगा हर घाव
मिट्टी जब उड़ने लगे लाजिम है छिड़काव

मैं तो उनके हिज्र में दिल से हूं मजबूर
कुर्जां चल तू ही बता सावन के दस्तूर

दोहा गज़ल

लाशों से हटने तो दो चौराहों की भीड़
शहरों-शहरों जाएगी अफवाहों की भीड़

ऐसे दिल पर लग गए जख्मों के अंबार
जैसे इक शो रूम में सययाओं की भीड़

रेंग रहे हैं राह में सन्नाटों के नाग
बीन बजाकर चली गई अफवाहों की भीड़

मस्जिद के मीनार तक जाती नहीं अजान
कैसे इतनी बढ़ गई दरगाहों की भीड़

वाह कैसी आवाज थी नाच उठे थे मोर
जंगल-जंगल लग गई चरवाहों की भीड़

गली-मौहल्लों तक नहीं पहुंची कोई आंख
अखबारों ने छाप दी चौराहों की भीड़

अपने खाली हाथ में कासा रखो फराज
लगने वाली है यहां अब शाहों की भीड़।

डॉ. फराज हामिदी
जयपुर

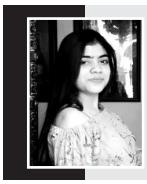

इशिका
बीकानेर,
(राजस्थान)

आखरी मुलाकात

तुम ने मुझसे एक आखरी मुलाकात के लिये पूछा वही उस अनजाने से जाने हुए पार्क में, याद है ना वही बैंच।

जहां हम घंटों बैठा करते थे, एक दूसरे के हाथ में हाथ डाल कर! और उन कुछ पल में, हम अपने सारे राज, सारा डर और सारा प्यार एक-दूसरे के सामने खोल के रख देते थे, पर वो आखरी दिन था, आना नहीं चाहती थी फिर भी दिल कह रहा था-यार चली जा। तो चेहरे पे एक शिकन लिए, थोड़ा सा गुस्सा लिए, तुम्हें दिखाने के लिये चली आई, अपने आप को यह तसल्ली देते हुए कि पिघलना मत।

अचानक मैंने तुम्हें देखा, अंधेरे में, बिल्कुल अकेले, शायद मेरे इंतज़ार में। तुम्हारी ओर कदम बढ़ाए, पास आ बैठी, यह कहते हुए-बोलो क्या बात है? तुमने अगले ही पल मेरे हाथ कस के पकड़ लिए और जिस तरह तुम कांप रहे थे, तुम्हारी आंखों में नमी थी, और तुम्हारे लफ्ज माफी मांग रहे थे! उस वक्त मैं तुम्हें रोने से रोकना चहाती थी, तुम्हें शांत कराना चाहती थी।

पर अफसोस चाह के भी नहीं करा सकती थी। हर एहसास जज्बात का गला घोंट लिया था और जब तुम मेरे करीब आए, मुझे गले से लगाया लगा जैसे तुम्हारी रूह मेरी रूह से टकरा गई!

तुम्हारी साँसों की वो गरमाहट,
मेरी साँसों तक आ पहुंची,
मेरे कानों में खुसफुसाते हुए,
आंसू आँखों से गिरते हुए

कह रहे थे-मत जाओ ना मुझे छोड़के! काश, मैं तुमसे कह पाती, कहीं नहीं जा रही, यही हूँ साथ तुम्हारे हमेशा। पर एक शब्द नहीं बोल पाई।

डर था फिर से कमज़ोर ना पड़ जाऊं, मन में एक ही सवाल घूमता रहा कि अगर, मैं रुक गई और तुमने मुझे फिर से दो हिस्सों में तोड़ दिया, तो उन दो हिस्सों के भी आगे हिस्से हो जाएंगे, और मुझमें मेरा क्या रह जाएगा? क्योंकि अब मुश्किल है हमेशा में विश्वास करना! और आज भी यहीं इसी बैंच पे बैठी हूँ, अपने पुराने-हंसते-खेलते किस्से लिए दिल में, जो मिटने का नाम नहीं ले रहे। पर तुम्हें पता है, इस जगह ने, अपने रंग फीके कर लिए हैं, शायद उन पेड़ों में वो महक नहीं जो पहले हुआ करती थी। बैंच में वो आराम नहीं और इस अँधेरे में वो चाँदनी नहीं! अच्छा याद है वो डांस, मेरा एक हाथ तुम्हारे कंधे पे, और तुम्हारा मेरी कमर से लिपटे हुए।

कसम से, दिल में सुकून था, हर चीज इतनी शांत थी कि तुम्हारी धड़कन महसूस कर सकती थी। काश, मैं फिर से वो आधे-अधूरे प्यार भरे लम्हे जी पाती, पर यह काश, काश ही रह जाएगा।

तुम और मैं,
दो जुड़े हुए साये की तरह थे,
तुमने जब मेरे साये का साथ छोड़ दिया,
तो मैंने मेरा भी साथ छोड़ दिया।

माही संदेश सामाजिक सरोकार

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं
समाज सेवा के लिए समर्थ लोग आगे आएं
एक कदम बढ़ेगा तो बढ़ेगा हिंदुस्तान
कपड़े दान करें नए नहीं तो अपने पुराने सही, किसी के लिए वही नए से कम नहीं
शहीद परिवार को आर्थिक सहयोग करें
किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई के लिए सहयोग करें
व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर गरीब बच्चों को पढ़ाकर आएं...

सम्पर्क :
संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303
email-
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश प्रतिनिधि

जोधपुर प्रतिनिधि
शुभम पांडे*

बीकानेर प्रतिनिधि
दीप्ति पाठक *

उदयपुर प्रतिनिधि
रुचि शर्मा*

असम प्रतिनिधि
रेखा मोरदानी*

गुजरात प्रतिनिधि
चिराग कुमार *

ट्री बैंक संस्था ने वितरित किए पौधे

उत्तर प्रदेश की ट्री बैंक संस्था की ओर से हाल ही पौधारोपण और नि:शुल्क पौधा वितरण समारोह का आयोजन सेक्टर 10 कुंभा मार्ग, प्रताप नगर किया गया। ट्री बैंक संस्था की संस्थापक प्रिया दत्त, जयपुर कॉर्डिनेटर अभिषेक भार्गव और प्रोग्राम की मुख्य अतिथि कांग्रेस नेता डॉ. अर्चना शर्मा व सोनू छाबड़ा, दीप्ति सैनी, बृजेश पाठक और आरजे शेखर सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सेंटर कॉर्डिनेटर अभिषेक भार्गव ने बताया कि इस ट्री बैंक से आधार कार्ड के जरिए लोग पौधे प्राप्त कर सकते हैं। इस बार यहां आए लोगों को तुलसी और नींबू के पौधे वितरित किए गए।

मौज मस्ती से भरा रहा 'गुलाल'

सक्षम संस्थान द्वरा आयोजित रंगारंग कार्यक्रम 'गुलाल' दीप पब्लिक स्कूल में आयोजित किया गया। सक्षम संस्थान की प्रोग्राम मैनेजर इवादीप व संस्थान की निदेशक अनीता सक्सेना ने बताया कि, कार्यक्रम में 200 से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम में सचिवालय के कर्मचारी संघ के अध्यक्ष पंकज कुमार, जे के जे की ओर से जतिन, राहुल शर्मा, एंकर अप्लव मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम में इंदु, सुनिता पंवार, भार्गवी जगधारी, विनीता सक्सेना, मीनाक्षी सक्सेना आदि उपस्थित रहे। सभी प्रतिभागियों को जेकेजे ज्वेलर्स की तरफ से उपहार दिए गए। इस कार्यक्रम में महिलाओं ने फैशन वॉक, रंगोली, नृत्य, गायन आदि के माध्यम से समा बांध दिया। बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम में जम कर आनंद लिया। गुलाल और फूलों की होली में प्यार से सरोबार इस उत्सव मय त्यौहार में सभी अतिथियों ने जम कर मनोरंजन किया और बच्चों के साथ होली खेली, संस्थान की प्रोजेक्ट मैनेजर इवादीप ने अपना जन्मदिन इन बच्चों के साथ मनाया।

जेकेके के शिल्पग्राम में आयोजित हुआ 'ऑक्टेव 2019' फेस्टिवल

जवाहर कला केंद्र (जेकेके) परिसर में स्थित शिल्पग्राम उत्तर-पूर्व भारत की रंग बिरंगी संस्कृति से सजा पांच दिवसीय 'ऑक्टेव 2019' का आयोजन उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, पटियाला और जवाहर कला केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

इसका उद्घाटन राजस्थान सरकार के पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग की प्रमुख शासन सचिव, श्रीमती श्रेया गुहा द्वारा किया गया। विजिटर्स को नॉर्थ-ईस्ट इंडिया की संस्कृति से रूबरू कराने के उद्देश्य से इसमें आसाम, मणिपुर, नागालैण्ड, मेघालय, अरूणाचल, त्रिपुरा, मिजोरम, सिक्किम राज्यों के चौखट, लैम्प, रूपांकन, झोपडी, बोध मठ, झंडे, भालों, आदि की प्रतिकृति देखने को मिली। कलाकारों के लगभग 15 दलों के 200 से अधिक कलाकार उत्तर पूर्व के सात राज्यों एवं सिक्किम की लोक संस्कृति को दर्शकों के सम्मुख प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि जयपुर में नॉर्थ-ईस्ट क्षेत्र के कलाकारों का संभवतया यह प्रथम विशाल आयोजन है।

सुमधुर काव्य महफिल में छाए जिन्दगी के रंग

50 से अधिक युवा कवियों ने सुनाई रचनाएं

कुणाल आचार्य को मिला पोएट ऑफ द मंथ पुरस्कार

साहित्यिक गतिविधियों की अग्रणी संस्था सुमधुर की काव्य महफिल-19 का आयोजन सुभाष नगर स्थित होटल सोवेनियर पेपरमेंट किया गया, इस अवसर पर जयपुर व राजस्थान के अन्य शहरों से आये युवा कवियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, इस बार यहाँ आयोजित इस सुमधुर काव्य महफिल में 50 से अधिक कवियों ने प्रीत , होली, राजनीति की विभिन्न परिभाषाओं को आधार बना कर अपनी काव्य प्रस्तुति दीं, कार्यक्रम में 100 से अधिक काव्य प्रेमियों ने श्रोता रूप में शिरकत की।

कार्यक्रम के आरंभ में डॉ. निकिता त्रिवेदी ने 'ना राधा ना श्याम रंगी हूँ, मैं तो तेरे नाम रंगी हूँ' गीत सुनाया इसके बाद सूर्य प्रकाश उपाध्याय ने 'आँसू जाने कितने खारे इन आँखों से बरसे हैं' फिर माला रोहित कृष्ण नंदन ने 'खिलते हैं सारे रंग मुझ पर जब नयन तेरे मुस्काते हैं' फिर विशाल गुप्ता ने 'हे पलाश! तुम बहुत सुंदर हो जैसे किसी तरुणी के लज्जा-सिक्त अधर', फिर सोफिल डांगी ने 'खुद के लिए इश्क नहीं लिखती ह', अभिलाषा पारीक ने 'रंग लगाओ,चंग बजाओ,भंग पिलाओ जी, होली आई जी' तनेश ने 'उसकी आँखों के साथ मसअला ये है कि उन्हें आइना नसीब नहीं' , अनुराग सोनी ने 'हर रंग की है अपनी तासीर, हर रंग है खुद में माहिर सुनाकर जिन्दगी को इक अलग रंग में बयां किया, नवीन कानूनगो 'कानून' ने 'ये जिंदगी है बावली, संग है सांवला, वो संवार जिंदगी कर गया है बावला' सुनाकर काव्य महफ़िल को आगे बढ़ाया, इसके बाद हर्षिता माथुर, ऋषि दीक्षित, शक्ति बारेठ, आहत, गणेश दत्त गौतम, संतोष संत, दीपिका जांगिड़, नीलम गर्ग, धीरेंद्र शेखावत , शाइस्ता, दीप्ति पाठक, कामेश, शोएब सहित तकरीबन 50 से अधिक कवियों ने अपनी काव्य प्रस्तुति दीं। सुमधुर संस्थापक प्रवीण नाहटा ने मुख्य अतिथि फारुख आफरीदी, विशेषाधिकारी, मुख्यमंत्री, राजस्थान का माल्यार्पण व शॉल ओढ़ाकर सम्मान किया। मार्च माह का सुमधुर पोएट ऑफ द मंथ का खिताब कुणाल आचार्य को प्रदान किया दिया।

राजस्थानी भाषा का कवि सम्मलेन 'झींणा सुरां री गूंज' आयोजित

जयपुरः प्रसार भारती आकाशवाणी के जयपुर केन्द्र और राजस्थानी साहित्य, कला व संस्कृति से रूबरू कराने के उद्देश्य से 'आखर' श्रृंखला के संयुक्त तत्वाधान में विश्व महिला दिवस के उपलक्ष्य में होटल आईटीजी राजपुताना में राजस्थानी भाषा का कवि सम्मेलन ''झींणा सुरां री गूंज'' आयोजित किया गया। यह कवि सम्मेलन श्री सीमेंट के सौजन्य से आयोजित किया गया।

महिला दिवस को समर्पित कवि सम्मेलन का संचालन कवयित्री सरोज देवल ने किया। बेटियों पर समर्पित कविता सुनाते हुये बीकानेर की कवियत्री मोनिका गौड़ कहती है कि तुम मुझे कोख मे ही मार रहे हों, क्या तुम्हें ऐसा करते हुये शर्म नहीं आ रही। जयपुर की कवयित्री गीता सामौर ने मानवीय संबंधित और प्रेम से ओतप्रोत कविता 'माँ के हिये री हूंस' सीकर की कवियत्री शारदा कृष्ण ने 'झूंठ री आंधी सुरंगा रै

भंवर, साँच सोनल सांझ सी भटके कठै, टूटता बिसवास दरपण री डगर, बीत गी आखी सदी, आपां कराहा काई कविताओं का पाठ किया। इनके अलावा इस कवि सम्मेलन में कवयित्रियों डॉ. अनुश्री राठौड़, अभिलाषा पारीक, कृष्णा जाखड़, डॉ कविता किरण, डॉ. करुणा दशोरा, डॉ. साधना जोशी प्रधान और सुशीला सिवरण आदि ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत की।

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

मानव-मन सदा पर आरोपी होता है। यदि उसका काम बन जाता है तो वह अपनी पीठ आप ही थपथपा लेता है और यदि काम बिगड़ जाता है तो वह सीधा भगवान् को ही दोष देने लग जाता है। यह नहीं देखता कि यह जो कुछ हुआ है, वह सब उसके ही कर्मों का फल है और इसे कड़वा हो या मीठा केवल उसे ही भोगना है।

विद्यावती के काम से तो सभी मंत्रमुग्ध थे। उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते थे। इस प्रशंसा से बहू का मनोबल और बढ़ जाता था। वह दूने उत्साह से कार्य करना आरम्भ कर देती थी। परन्तु चुपके-चुपके मौत उसकी ओर बढ़ रही थी।

विद्यावती के चार भाई थे। माता-पिता भी जीवित थे। उसका मायका गणेशपुर से लगभग आठ कोस दूर

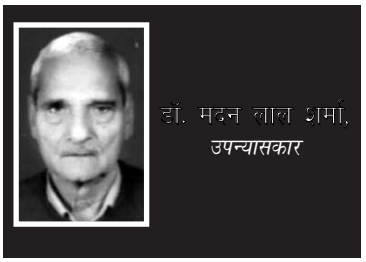

घाटमपुर में था। उसके पिता के पास थोड़ी सी ही खेती थी। इस कारण तीन बड़े भाई मद्रास में दूध और मिठाई की दुकान चलाते थे। वहां उन्हें आमदनी अच्छी हो जाती थी। इससे उन्होंने गांव में मकान अच्छा बनवा लिया था और बहिन की शादी भी धूम-धाम से की थी। थरा में पंसेरीभर चांदी के रुपये दिये थे और बहिन को जेवर-कपड़े-बर्तन आदि भी दिये थे। बारात की खूब खातिरदारी की थी। इस विवाह की धूम गणेशपुर और घाटमपुर में पीछे तक सुनाई देती थी। सभी लोग बहुत प्रशंसा करते थे और कहते थे कि दोनों ही ओर के रिश्तेदर बहुत ही दिलेर हैं। इन्होंने जो किया है, बहुत ही प्रसन्न मन से किया है। विवाह में कोई ऐसी चिकल्लस नहीं हुई, जैसी दूसरी जगह आमतौर पर होती रहती है।

विद्यावती के बड़े भाई का नाम रामलाल था। वे विवाहित थे और मद्रास में ही अपने परिवार के साथ रहते थे। उनसे छोटे कालीचरण थे। इनका भी विवाह हो गया था। परन्तु वे अपनी पत्नी को मद्रास नहीं ले जाते थे। उसे माता-पिता और परिवार की सेवा के लिए घाटमपुर में ही छोड़ रखा था। भाभी का नाम कलावती था। तीसरा भाई कौशल किशोर था। यह बहुत ही होनहार था। शादी अभी नहीं हुई थी।

...क्रमशः अगले अंक में

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/शायर से...

कुणाल आचार्य
(राजसमंद)

बदल जायेगा देश के हर नेता का अब स्वभाव।
फिर से आ गया चुनाव।।

पूरे मुल्क में होगी जूठे वादों की बारिश।
देश को लूटा जाए कैसे करेंगे सब ये साजिश।
इनके हर एक भाषण में होगा एक छलाव।
फिर से आ गया चुनाव।।

भोली भाली जनता पर अपना जादू करेंगे।
अंदर से रावण है सारे पर अब साधु बनेंगे।
कभी कहेंगे झूठ शहर में कभी कहेंगे गाँव।
फिर से आ गया चुनाव।

वो आएंगे, मुख में मिश्री घोल के बात करेंगे।
जाति मजहब मंदिर और मस्जिद की बात करेंगे।
अपना वोट सही देना तुम ये मेरा है सुझाव।
फिर से आ गया चुनाव।।

सपना था कि मेरी लिखी गज़लें जगजीत सिंह गाएं

मेहनत, आत्मविश्वास और किस्मत से नसीब हुआ यह पल- योगिता 'जीनत'

कहते हैं न कि नारी अगर मन में ठान ले तो वह क्या नहीं कर सकती आज हम ऐसी ही नारी शक्ति से आपको रुबरु करा रहे हैं जो गीत, गजल और भजन लिखती हैं, जिन्होंने जिंदगी में कामयाबी अपनी मेहनत और लगन से हासिल की है और अनवरत रुप से इनकी कामयाबी का सफर बदस्तूर जारी है...

योगिता 'ज़ीनत' से माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की विशेष बातचीत

अपने बचपन के दिनों के बारे में बताइए, अपनी पढ़ाई के दौरान आप क्या सपने देखा करती थीं?

बचपन में पिताजी की लंबी बीमारी की वजह से हम चारों भाई-बहनों ने अपने माता-पिता के संघर्ष को देखा था लेकिन इसके बावजूद उन्होंने हमारी परवरिश बहुत प्यार से की इसलिए बचपन से ही समझदारी आ गई थी कि जीवन में कुछ करना है। मैं कॉमर्स फैकल्टी में थी और सीए करके पिताजी का सपना पूरा करना चाहती थी ताकि मेरे माता-पिता को खुशियाँ दे सकूँ , इसलिए जल्दी शादी होने के बाद भी निरन्तर पढ़ाई करती रही। कनोडिया कॉलेज से बी.कॉम करके एम.कॉम किया लेकिन दिल में अपने माता पिता की जीवन भर की तपस्या को देखते हुए उनके चहरे पर खुशी देखने के लिए मन में कुछ कर दिखाने की इच्छा हमेशा रही और मैंने प्रशासनिक सेवा में जाने की सोची और मुझ पर ईश्वर की कृपा रही कि मैंने पहले प्रयास में ही बिना किसी मार्गदर्शन के राजस्थान प्रशासनिक सेवा की प्रारंभिक परीक्षा पास की और मुख्य परीक्षा भी दी जिसमें सिर्फ कुछ अंक कम रह जाने की वजह से साक्षात्कार के चरण में नहीं पहुँच पाई। फिर राजस्थान यूनिवर्सिटी से लोक प्रशासन में एम.ए. की परीक्षा पास की।

शादी के बाद पत्नी पर घर-परिवार की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है, आपने किस तरह घर-परिवार की देखभाल के साथ-साथ अपनी अभिरुचियों को समय दिया?

शादी के बाद भी निरंतर अपनी शिक्षा जारी रख कर इतना सब हासिल कर पाना मेरे पिता स्वरूप ससुर जी और पूरे परिवार के कारण संभव हो सका। मेरे ससुरजी भी सरकारी अधिकारी (सीनियर एकाउंट्स ऑफिसर) के पद पर कार्यरत थे। जीवन में जन्म देने वाले माता-पिता और भाई बहनों का प्यार और साथ मिलना तो स्वभाविक होता ही है लेकिन ससुराल में पितातुल्य ससुर जी का इतना स्नेह और हर कदम पर उनका साथ मिलना मेरे लिए सौभाग्य की बात रही। बाद में कुछ पारिवारिक जिम्मेदारियों की वजह से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी नहीं कर सकी। कुछ समय बाद मेरे बेटे दिव्यांश का जन्म हुआ और उसकी परवरिश में लग गई।

आपने भगवान कृष्ण पर बहुत से भजन लिखे हैं। गाय पर दोहे भी लिखे और उनका एक एलबम भी निकाला था, उस बारे में कुछ बताइए?

मैंने मार्च 2011 में गो माता पर '121' दोहे लिखे ताकि समाज में और नई पीढ़ी को गाय के सामाजिक और आर्थिक महत्व को समझाया जा सके। इन दोहों को बॉलीवुड के प्रसिद्ध गायक रूप कुमार राठौड़ और साधना सरगम की आवाज़ में रिकॉर्ड किया गया है। नवम्बर 2011 में जालौर जिले में विश्व की सबसे बड़ी गौशाला 'श्री गोधाम महातीर्थ - आनंद वन पथमेड़ा' में एक बड़े मंच पर रमेश भाई ओझा के कर कमलों से गाय पर

साहित्य के क्षेत्र में अब तक कौन कौन से सम्मान आपको मिल चुके हैं?

मुझे नवांकुर साहित्य सभा, दिल्ली के साहित्यिक कार्यक्रम में अखिल भारतीय स्तर पर नवोदित कवियों में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर 'नवांकुर साहित्य सम्मान', राज सारथी फाउंडेशन, जयपुर के तत्वावधान में आयोजित 'तमन्ना उड़ान की नारी शक्ति सम्मान' तथा हाल ही 03 फरवरी 2019 को राजस्थान युवा छात्र संस्था द्वारा साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'विवेकानंद गौरव सम्मान' 2019 मिल चुका है।

लिखे हुए दोहों की सीडी - 'गो कथा' का लोकार्पण किया गया, जिसका लाइव प्रसारण संस्कार चैनल से किया गया। अब तक मैं 150 से अधिक भजन खाटूश्याम बाबा और राधा-कृष्ण पर लिख चुकी हूँ जिन्हें कई ख्यात गायकों ने अपनी आवाज दी है। परिवार में माता-पिता व भाई -भाभी व बहनों का सहयोग हमेशा मिलता रहा भैया योगेश ने हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन दिया, मेरी छोटी बहन और मशहूर गायिका अंबिका मिश्रा ने भी मेरी लिखी गजलों और भजनों के एक एल्बम 'मेरे कान्हाजी' में अपनी आवाज दी है। इसके अलावा हर कदम पर पति का साथ बना रहा, परिवार के हर सदस्य का प्रोत्साहन मेरी हिम्मत को दो गुना करता है।

आप इतने बेहतरीन गीत , गज़लें व भजन लिखती हैं। अपने पहले काव्य पाठ के बारे में बताइए जब मंच से आप कवयित्री के रूप में रूबरू हुई?

अप्रैल 2014 में देश-विदेश में प्रख्यात साहित्यकार , दोहाकार और लेखक नरेश शांडिल्य जी ने दिल्ली में आयोजित काव्यसम्मेलन में मुझे भी आमंत्रित किया और उन्हीं के प्रेरित करने पर वहाँ उपस्थित साहित्यजगत की बड़ी-बड़ी काव्य विभूतियों के समक्ष मैंने पहली बार काव्यपाठ किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष के रूप में उपस्थित देश के वरिष्ठ कवि व गज़लकार बाल स्वरूप राही जी ने भी मेरी गज़लों को बहुत सराहा और मुझे एक गज़ल संग्रह तैयार करने के लिए कहा और इसके बाद मेरा साहित्य की तरफ रुझान हुआ। तभी से लिखने का सफर जारी है और साथ ही अपनी 3 वर्षीय बेटी आराध्या और बेटे दिव्यांश की परवरिश भी कर रही हूँ।

जीवन में आने वाले संघर्षों का सामना आप कैसे कर पाती हैं ?

हर व्यक्ति के जीवन में संघर्ष और उतार - चढ़ाव आते हैं। मैंने भगवान कृष्ण को हमेशा अपने साथ महसूस किया है इसलिए कभी परिस्थितियों से हार नहीं मानीं। यदि ईश्वर में आस्था हो, परिवार का साथ हो तो आप अपने आत्मविश्वास की चाबी से अपने सपनों के ताले खोल सकते हैं।

...शेष पृष्ठ 31 पर

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखा: कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

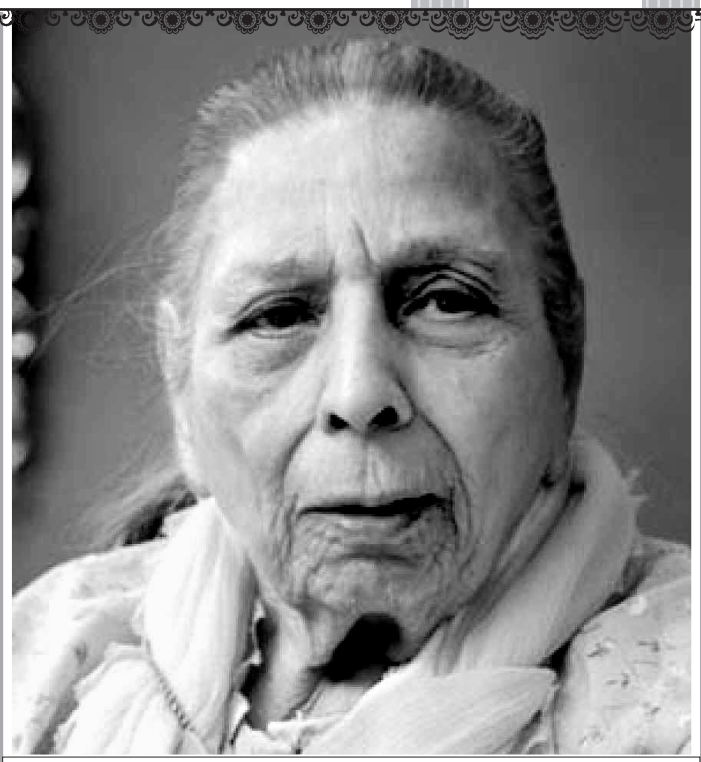

'बूझ मेरा क्या नाम रे'
शमशाद बेगम

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

'जिंगलबेल्स सी आवाज, अपनापन लिए...! आवाज क्या, पंजाब के दरियाओं की रवानी...!!' ये कहना था मशहूर संगीतकार ओ.पी.नैयर का (धर्मयुग 1 अगस्त, 1991 / पेज 44), उस मीठी, खनकती हुई आवाज के लिए जो खुद को दुनिया की नजरों से छुपाए रखकर 30 बरसों तक परीकथाओं की किसी नायिका की तरह फिल्म संगीत के चाहने वालों को लुभाती रही। न कोई फोटो, न कोई इंटरव्यू, हर तरह के प्रचार से उन्होंने खुद को दूर रखा। साल 1969 में पहली बार वो मुंबई के षण्मुखानंद हॉल में मंच पर आयीं तो लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। लेकिन उसके बाद अचानक ही उन्होंने फिल्मी दुनिया को अलविदा कहा और गुमनामी में खो गयीं। बरसों बाद अगस्त 1998 में वो एक बार फिर से सुर्खियों में आयीं जब देश के तमाम अखबारों में उनके निधन की खबरें छपीं। लेकिन जिनका निधन हुआ था वो नसीम की मां और सायरा बानो की नानी, यानि कि कोई और शमशाद बेगम थीं। सच्चाई का पता चलने के बावजूद कुछेक को छोड़कर किसी भी अखबार ने अपनी इस गलती को सुधारने की कोशिश नहीं की। यहां तक कि 'इंडियन मैलोडी डॉट कॉम' नाम की वेबसाईट तो संगीत प्रेमियों को आज भी यही गलत सूचना देती आ रही है। उधर ये मानने वालों की भी कमी नहीं थी कि शमशाद बेगम पाकिस्तान चली गयी हैं। सिनेमा और पत्रकारिता से जुड़े उनके जानकार कई लोग ये समझते थे कि शमशाद बेगम दक्षिण मुंबई के कोलाबा में रहती हैं जहां वो पहले रहा करती थीं। लेकिन ये तमाम धारणाएं सिरे से गलत थीं। सच ये है कि शमशाद बेगम मुंबई में ही थीं लेकिन 1990 के दशक के मध्य में वो कोलाबा छोड़कर पवई के अति समृद्ध इलाके में शिफ्ट हो गयी थीं जहां वो आज भी रह रही हैं।

निश्चित तौर पर उन तमाम अफवाहों के लिए शमशाद बेगम का शर्मीला स्वभाव भी कम जिम्मेदार नहीं था जो हमेशा से ही बाहरी लोगों से मिलने-जुलने से कतराती आयी थीं। इंटरव्यू करना या फोटो लेना तो दूर, उन तक पहुंच पाना ही अपने आप में टेढ़ी खीर था। अपना टेलीफोन नंबर और पता-ठिकाना सार्वजनिक करना उन्हें कतई मंजूर नहीं था। अक्सर लोग पूछते हैं कि मैंने उन्हें कैसे तलाशा, सो आज मैं पहली बार इस आलेख के जरिए उन तक पहुंचने की अपनी कवायद का खुलासा कर रहा हूं, क्योंकि मेरी कलम से आज तक इस बारे में कभी कुछ छपा ही नहीं। दरअसल उनके बारे में जानने की उत्सुकता हमेशा से ही मन में थी। उधर हिंदी सिनेमा के इतिहास के प्रति मेरे जोशो-खरोश को देखते हुए वरिष्ठ पत्रकार और हिंदी साप्ताहिक 'सहारा समय' के मुंबई ब्यूरो चीफ धीरेन्द्र अस्थाना ने उस अखबार के कॉलम 'क्या भूलूं क्या याद करूं', 'बालम खुद' और 'फिल्म पहेली' मेरे हवाले किए तो मुझे एक मकसद भी मिल गया। खोजबीन के दौरान 'इंडियन मैलोडी डॉट कॉम' के शमशाद बेगम से संबंधित पेज पर नजर पड़ी तो मन में कई सवाल उठ खड़े हुए। इस पेज के

मुताबिक निधन के समय शमशाद बेगम की उम्र 100 साल की थी। इसका मतलब उनका जन्म साल 1898 में हुआ था? तो क्या उन्होंने 42 साल की उम्र में (साल 1940 में) फिल्मों में गाना शुरू किया था? क्या अपना आखिरी गाना उन्होंने 70 साल की उम्र में (साल 1968 में) रेकॉर्ड कराया था? नहीं...! मुझे लगा, कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है।

उनका फ़ोन नंबर ढूंढने में ही क़रीब एक साल गुज़र गया। संगीतकार नौशाद, वरिष्ठ पत्रकार उदयतारा नायर और 1990 के दशक के पूर्वार्ध में दूरदर्शन पर प्रसारित हुए कार्यक्रम 'गाता जाए बंजारा' के निर्माण से जुड़े क्षमेन्द्र गंजू जी से हुई बातचीत के आधार पर इतना तो तय हो चुका था कि शमशाद बेगम जिंदा हैं और मुंबई में ही हैं। लेकिन उनका सही पता-ठिकाना और फोन नंबर फिल्मोद्योग से जुड़े किसी भी व्यक्ति या ट्रेड यूनियन के पास नहीं था। यहां तक कि सिंगर्स एसोसिएशन' और 'म्यूजिक डायरेक्टर्स एसोसिएशन' से भी उनके बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पायी थी। अब मेरे पास सिर्फ एक सूत्र था, और वो था शमशाद बेगम के दामाद का सरनेम और उनका फौजी ओहदा, जिसके बारे में मुझे क्षमेन्द्र गंजू ने बताया था। करीब 12 साल पहले प्रसारित हुए कार्यक्रम 'गाता जाए बंजारा' में मैं शमशाद बेगम को देख चुका था और इसी वजह से मैंने क्षमेन्द्र गंजू से सम्पर्क किया था। उनके मुताबिक शमशाद बेगम उस वक्त कोलाबा में रहती थीं।

मेरी तलाश को आसान किया शमशाद बेगम के दामाद के फौजी ओहदे, उनके दुर्लभ सरनेम और इन सबसे बढ़कर एम.टी.एन.एल. की टेलीफोन डायरेक्ट्री की सीडी ने। समूचे मुंबई में उस सरनेम के बामुश्किल आठ-दस टेलिफोन उपभोक्ता मुझे मिले, जिनमें से एक नाम के आगे वो ही फौजी ओहदा जुड़ा हुआ था। फोन

उठाने वाली महिला ने पहले तो इस बात से साफ इंकार कर दिया कि उस नंबर पर कोई शमशाद बेगम रहती हैं। लेकिन आसानी से हथियार डालना मुझे भी मंजूर नहीं था। कुछ देर की मान-मनौवल के बाद उन्हें मानना ही पड़ा कि वो शमशाद बेगम की बेटी हैं और शमशाद बेगम उन्हीं के साथ रहती हैं। लेकिन शमशाद बेगम से मिलने के लिए करीब 6 महिने और इंतजार करना पड़ा। उस दौरान कई बार उनकी बेटी से बातचीत हुई जिन्होंने आखिरकार अपनी मां को इस मुलाकात के लिए मना ही लिया। लेकिन शर्त ये थी कि मुलाकात आधा घंटे से ज्यादा की नहीं होगी, आवाज रेकॉर्ड नहीं की जाएगी और न ही वो फोटो खिंचवाएंगी।

अब सबसे बड़ा सवाल ये था कि बिना फोटो या रेकॉर्डेड इंटरव्यू के मैं साबित कैसे कर पाऊंगा कि शमशाद बेगम मुंबई में ही हैं और मैं उनसे मिल चुका हूं? उनकी शर्त ने 'सहारा समय' के मेरे साथी कैमरामैन अनिल मुरारका के लिए तो उनके दरवाजे बंद कर ही दिये थे, मुझे डर था कि ज्यादा जोर दूंगा तो कहीं वो मुझसे मिलने से भी इंकार न कर दें। चूंकि अब तक मैं इन बुजुर्ग महिला कलाकारों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझने लगा था इसलिए थोड़ी बहुत दिमागी कसरत के बाद रास्ता भी नजर आ ही गया। मिलने से एक रोज पहले मैंने शमशाद बेगम की बेटी को फोन करके पूछा कि अगर मैं अपनी पत्नी को साथ लेकर आऊं तो आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी? मैं जानता था कि पत्नी के साथ होने से माहौल पूरी तरह से घरेलू सा हो जाएगा। और जैसी कि उम्मीद थी, उनकी बेटी का जवाब भी सकारात्मक और बेहद गर्मजोशी भरा मिला। वो अलग बात है कि पत्नी को मनाने में भी मुझे कम मेहनत नहीं करनी पड़ी क्योंकि चमक-दमक भरी इस दुनिया को थोड़ा-बहुत करीब से देखने के बाद उनके मन में बहुत पहले ही 'ये मुखौटे चढ़ाए नकली लोग आप ही को मुबारक' वाला भाव पैदा हो चुका था, खैर...!

बेहद खूबसूरत, पॉश इलाका! सिक्योरिटी गार्ड्स की कड़ी पूछताछ! तय समय पर हम उस बहुमंजिला इमारत की छठवीं मंजिल के उनके फ्लैट के दरवाजे पर खड़े थे। दरवाजा उनके दामाद ने खोला। रिटायर्ड फौजी अफसर। रौबदार लेकिन विनम्र व्यक्तित्व। गर्मजोशी के साथ उन्होंने हमारा स्वागत किया। बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ और जैसे ही उन्हें पता चला कि मैं देहरादून का रहने वाला हूं तो वो करीब 50 साल पहले 'इंडियन मिलिट्री एकेडमी' में ट्रेनिंग के दौरान गुजारे समय और देहरादून शहर, क्लेमेण्टाऊन, राजपुर, झड़ीपानी और मसूरी की यादों में खो गए। उसी दौरान उनकी पत्नी भी, जिनसे पिछले 6 महिनों में कई बार मेरी फोन पर बात हुई थी, आकर बातचीत में शामिल हो चुकी थीं।

करीब 20 मिनट बाद आखिरकार वो लम्हा भी आ ही गया जिसके लिए मैं पिछले डेढ़ सालों से जद्दोजहद कर

रहा था। छड़ी का सहारा लिए, गुजरे जमाने की मशहूर गायिका शमशाद बेगम हमारे सामने थीं। 'आखिर आपकी जिद तुड़वा ही दी हमने' कहते हुए मैंने हाथ जोड़े तो वो हंस पड़ीं। 'पूछो क्या पूछना है' -कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने कहा।और बात करते-करते कब ढाई घंटे बीत गए पता ही नहीं चला। अपने बचपन से अब तक की तमाम कड़ियों को सिलसिलेवार जोड़ते हुए उन्होंने बताना शुरू किया था कि - 'मैं 14 अप्रैल, 1919 को लाहौर में पैदा हुई थी। मेरे अब्बा मकानों के ठेके लिया करते थे और 8 भाई-बहनों में मैं 5वें नंबर पर थी। संगीत की विधिवत शिक्षा मैंने कभी नहीं ली। मुझे पता ही नहीं मैंने कब गाना शुरू कर दिया था। स्कूल में थी तो सब बच्चों के बीच मेज पर खड़ी होकर दुआ गाती थी। रमजान के दिनों में रिश्तेदार मुझसे नातें सुनने आते थे। 12 बरस की थी जब मेरे चाचा रेकॉर्ड बनाने वाली 'जाईनोफोन कंपनी' में मुझे साथ लेकर गए जहां बतौर संगीतकार नौकरी कर रहे मास्टर गुलाम हैदर ने मेरा ऑडिशन लिया था। मैंने बहादुरशाह जफर की लिखी ग़ज़ल 'मेरा यार मुझे मिले अगर' का स्थायी और एक अंतरा गाया और इम्तहान में पास हो गयी। सही मायनों में ये मास्टर गुलाम हैदर ही थे जिन्होंने मेरी आवाज को तराशा और मुझे संगीत की बारीकियां सिखायीं। उस जमाने में मेरे गाए कई प्राईवेट रेकॉर्ड बाजार में आए और पसंद किए गए। साल 1935 में जारी हुए 'ओम जय जगदीश हरे' की आरती के मेरे रेकॉर्ड की बहुत जबर्दस्त बिक्री हुई थी, हालांकि उस पर मेरा असली नाम नहीं दिया गया था। मेरा पहला हिट गीत था 'हाथ जोड़ा पखियां दा कसम खुदा की' जिसके बाद मेरी व्यस्तता ऐसी बढ़ी कि 5वीं के बाद मुझे पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी। प्लेबैक तब तक शुरू नहीं हुआ था और सुरीला गाने वालों के लिए फिल्मों में अभिनय के मौकों की भरमार थी। मेरे सामने भी ऐसे कई प्रस्ताव आए लेकिन मेरे सख्त मिजाज अम्मी-अब्बा को ये मंजूर नहीं था। 16 बरस की उम्र में मेरी शादी भी हो गयी थी लेकिन 'परदे में ही रहने' की अम्मी-अब्बा की सख्ती की वजह से पैदा हुई झिझक मेरे स्वभाव का ही हिस्सा बन गयी। यही वजह है कि सार्वजनिक तौर पर लोगों से मिलने, इंटरव्यू देने और फोटो खिंचवाने में मैं आज भी खुद को बेहद असहज महसूस करती हूं।'

साल 1937 में रेडियो पर गाने का मौका मिला तो शमशाद बेगम पेशावर चली गयीं। 2 साल बाद लाहौर में रेडियो स्टेशन खुला तो वो वापस आकर लाहौर के साथ ही दिल्ली और लखनऊ रेडियो पर भी गाने लगीं। 1930 का दशक खत्म होते होते फिल्मों में प्लेबैक का इस्तेमाल भी पूरी तरह शुरू हो चुका था। शमशाद बेगम के मुताबिक ऐसे में उन्हें लाहौर के 'पंचोली आर्ट्स' के मालिक 'दलसुख एम.पंचोली' ने पंजाबी फिल्म 'यमला जट' में गाने के लिए बुलाया। उस फिल्म के लिए शमशाद बेगम का रेकॉर्ड कराया पहला गाना एक सोलो था, 'आ सजना दोवें रल के चलिए परले पार'। मास्टर गुलाम हैदर द्वारा संगीतबद्ध ये सिल्वर जुबली हिट फिल्म साल 1940 में रिलीज हुई थी। अभिनेता प्राण ने भी अपना करियर इसी फिल्म से शुरू किया था।

साल 1941 में बनी 'खजांची' शमशाद बेगम की पहली हिंदी फिल्म थी। इस फिल्म का निर्माण भी 'पंचोली आर्ट्स' (लाहौर) के बैनर में ही हुआ था। 'एक कली नाजों की पली' और 'सावन के नजारे हैं' सहित शमशाद बेगम के गाए इस फिल्म के सभी 9 गीत उस जमाने में बेहद मशहूर हुए थे। फिल्म खजांची के संगीतकार मास्टर गुलाम हैदर और गीतकार वली साहब थे।

करीब 30 सालों के अपने करियर के दौरान शमशाद बेगम ने मास्टर गुलाम हैदर, सचिन देव बर्मन, नौशाद, सी.रामचन्द्र, मदनमोहन और ओ.पी. नैयर सहित अपने समय के तमाम दिग्गज संगीतकारों के निर्देशन में 1600 से भी ज्यादा गीत गाए। शमशाद बेगम के मुताबिक, 1940 का दशक उनके लिए बेहद व्यस्तताओं भरा रहा। फिर जैसे-जैसे गायक-गायिकाओं और संगीतकारों की नयी जमात मैदान में उतरती रही उनकी व्यस्तताएं कम होती चली गयी। उनका कहना है, 'साल 1968 में बनी फिल्म 'किस्मत' का, ओ.पी.नैयर के संगीत में आशा भोंसले के साथ गाया दोगाना 'कजरा मोहब्बत वाला' मेरा आखिरी रेकॉर्डेड गीत था, हालांकि उसके काफी बाद तक भी 'प्यार किया तो डरना क्या' (रातों का राजा/1970), 'तीन कवांरियां...हाथों में मेहंदी रचा दे कोई' (पर्दे के

***शमशाद** बेगम के मुताबिक, 1940 का दशक उनके लिए बेहद व्यस्तताओं भरा रहा। फिर जैसे-जैसे गायक-गायिकाओं और संगीतकारों की नयी जमात मैदान में उतरती रही उनकी व्यस्तताएं कम होती चली गयीं। उनका कहना है, 'साल 1968 में बनी फिल्म 'किस्मत' का, ओ.पी.नैयर के संगीत में आशा भोंसले के साथ गाया दोगाना 'कजरा मोहब्बत वाला' मेरा आखिरी रेकॉर्डेड गीत था।*

पीछे/1971) और 'ओ सनम तेरे लिए जागे हैं रात रात भर', 'कर लो जितना सितम' और 'हमें मिटाने आया जो' (गंगा मांग रही बलिदान/1981) जैसे पहले से रेकॉर्डेड मेरे कुछ गीत बाजार में आते रहे।

शमशाद बेगम के शौहर गणपत लाल बत्तो मूल रूप से डेरा इस्माईल खां के रहने वाले थे और पेशे से वकील थे। शमशाद बेगम का कहना है, 'साल 1955 में शौहर के गुजरने के बाद से मैं अपनी बेटी और दामाद के साथ रह रही हूं। साल 1971 में दामाद का ट्रांसफर हुआ तो करीब 7 साल मैंने भी उनके साथ मुंबई से बाहर जालंधर और महू जैसे फौजी इलाकों में रहकर गुजारे। नतीजतन वापस लौटने तक फिल्मोद्योग से मेरा रिश्ता पूरी तरह से टूट चुका था। और फिर धीरे-धीरे मैं घर की चारदीवारी में सिमटती चली गयी।'

जैसा कि मुझे यकीन था, उन ढाई घंटों में माहौल इतना सहज हो चुका था कि जब उन्हें पता चला कि मैं एहतियातन कैमरा साथ लेकर आया हूं तो वो सहर्ष ही फोटो खिंचवाने और छपवाने के लिए तैयार हो गयीं। अगर मैं अकेला आया होता तो शायद ऐसा न हो पाता। लेकिन संयुक्त परिवार में पली बढ़ीं और संयुक्त परिवार में ही बहू बनकर लंबा अरसा गुजारने वाली मेरी पत्नी अंशु को उन तीन बुजुर्गों के साथ घुलने-मिलने में जरा भी वक्त नहीं लगा था। ...और जैसा कि मुझे यकीन था, मेरी योजना पूरी तरह से कामयाब रही थी। मैं ये स्वीकार करता हूं कि अगर मेरी पत्नी ने हर कदम पर मेरा साथ न दिया होता तो मैं आज भी उत्तराखंड के पहाड़ों में 'धोपड़धार', 'चैलूसैण', 'डुंडा' या 'रानाचट्टी' जैसी 'पंजाब नेशनल बैंक' की किसी शाखा में कुढ़ता हुआ, ज्यादा से ज्यादा मैनेजर की नौकरी बजा रहा होता। खैर...! विदा लेते वक्त मैंने इंटरव्यू देने और फोटो खिंचाने के लिए शमशाद बेगम का शुक्रिया अदा करते हुए उनसे कहा कि 'एक रोज मैं आपकी आवाज भी रेकॉर्ड करूंगा जरूर' तो वो हंस पड़ीं।

18 सितम्बर 2004, की दोपहर हुई इस मुलाकात की रिपोर्ट दो दिनों के अंदर ही तैयार करके मैंने धीरेन्द्र अस्थाना जी के जरिए 'सहारा समय' के नोएडा स्थित संपादकीय विभाग के पास भिजवा दी थी। मुझे डर था कि अगर इस रिपोर्ट के छपने से पहले किसी और ने शमशाद बेगम के मौजूदा हालात के बारे में छाप दिया तो मेरी डेढ़ साल की मेहनत बेकार चली जाएगी इसलिए मैं चाहता था कि ये रिपोर्ट जल्द से जल्द छप जाए। लेकिन 'सहारा समय' के संपादकीय विभाग को शायद इस मामले की अहमियत और गंभीरता का अहसास नहीं था। उधर 'दैनिक जागरण' के मुंबई ब्यूरो को इस विषय में पता चल चुका था और वो इसे अपने अखबार में छापना चाहते थे। मैंने उनसे थोड़ा रूकने का आग्रह किया और जब 3 हफ्तों बाद भी ये रिपोर्ट 'सहारा समय' के नौएडा दफ्तर की फाईलों में ही दबी रही तो मजबूरन मुझे 'दैनिक जागरण' के लिए हामी भर देनी पड़ी। 12 अक्टूबर, 2004 के 'दैनिक जागरण' के मुखपृष्ठ पर वरिष्ठ पत्रकार आनंद भारती जी के हवाले से शमशाद बेगम तक मेरे पहुंचने की रिपोर्ट छपी तो देश भर के मीडिया और खासतौर से इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में हलचल मच गयी। मुझ पर शमशाद बेगम का पता-ठिकाना और फोन नंबर बताने के लिए दबाव पड़ने लगा। आखिरकार मुझे 'दैनिक जागरण' के मुंबई ब्यूरो की सलाह पर शमशाद बेगम से इजाजत लेकर एक चैनल विशेष के संवाददाता को उनका फोन नंबर देना ही पड़ा। फिर तो तमाम चैनलों में शमशाद बेगम का इंटरव्यू करने की होड़ मच गयी। इसके बाद सरकार भी कोमा की स्थिति से बाहर आयी और उसने साल 2009 में शमशाद बेगम को 'पद्मभूषण' से सम्मानित करके पुण्य कमाया।

लघुकथा

लत

जैसी मां वैसी बेटी... एकदम लापरवाह... अरे! इतना भी क्या मोबाइल का चस्का... दोस्तों से बातें तो बाद में भी हो सकती थी... ट्रेन छूट जाती तो? शैलेश ने पत्नी रीमा को फोन पर ही लताड़ना शुरू कर दिया। लेकिन हुआ क्या? और आप तो दिल्ली जा रहे थे ना... बीच में बेटी कहाँ से आ गई? वो तो बेचारी जयपुर में कोचिंग ले रही है...रीमा को पति की बात कुछ समझ नहीं आई, दिल्ली ही जा रहा हूँ... रेलवे स्टेशन पर ही हूँ... अभी तुम्हारी बेटी का फोन आया... वो इंटरव्यू देने के लिए भोपाल जा रही थी... दोस्तों से बातें करते-करते गलत प्लेटफॉर्म पर चली गई... वो तो समय रहते पता चल गया... भाग कर ट्रेन पकड़ी... छूट जाती तो? पता नहीं मोबाइल की ये कैसी लत है, शैलेश ने पूरी बात बताई. हालाँकि उसका गुस्सा अभी भी उबाल पर था, अरे हो जाता है कभी-कभी... बच्ची है... इसे इतना तूल देने की क्या जरूरत है... रीमा ने बेटी का पक्ष लिया, तुम तो कहोगी ही, तुमसे बातें करते-करते प्लेटफॉर्म नंबर तीन पर आ गया जबकि दिल्ली वाली ट्रेन तो प्लेट फॉर्म चार पर खड़ी है... बाप रे! बंद करो ये फोन... कहीं ट्रेन छूट गई तो लेने के देने पड़ जाएंगे... माँ-बेटी दोनों एक जैसी हैं, शैलेश ने बड़बड़ाते हुये फोन काटा और प्लेटफॉर्म चार पर जाने के लिए फुट ब्रिज की तरफ दौड़ लिया.

इंजी. आशा शर्मा
बीकानेर, राजस्थान

हवामहल

लोक सभा के चुनावों का मौसम चल रहा है, हर तरफ बस हवा ही हवा है, क्या करें लोग धरातल पर कम हवा में ज्यादा रहते हैं, सोचते भी हवा में हैं और यूं कहें कि जिंदगी को हवामहल बना रखा है।

कुछ लोगों के हवामहल ध्वस्त हो गए टिकटों की आस में कब से नैन बिछाए बैठे थे, टिकट इस तरह कटे कि जैसे खिसिआनी बिल्ली खंभा नौचे

और कुछ महानुभाव ऐसे भी निकले बरसों से जिस पार्टी ने बनाया जिसके दम से लगातार चुनाव जीते जिसके दम से जिदंगी को ओहदा मिला और जिस पार्टी को ताउम्र कोस कोस कर चुनावी वादे किए आज उसी पार्टी से मोहब्बत निभा रहे हैं, खैर राजनीति में भरोसे की बात न ही हो तो बेहतर है,

सबको बस टिकट पाना और निकट जाना रास आता है चाहे कीमत कुछ भी अदा करनी पड़े, समझदार को कहते हैं न कि इशारा काफी होता है, मगर यहां कुछ ऐसे भी समझदार हैं जो इशारे को भी दुबारा समझना चाहते हैं क्योंकि राजनीति के इशारे कुछ खास होते हैं, बाएं हाथ की बात दाएं हाथ को नहीं पता लगती और जब पता लगती है तो कुछ भी बचता नहीं

हम तो बंजारे ठहरे जो दिखता है ये दिल वही लिखता है, सबको चुनावों से आस है मगर ये आस बस नेताओं को है क्योंकि जनता के लिए हर चुनाव बस उम्मीद दे जाते हैं और अंत में हर बार ये उम्मीद ही दगा दे जाती है। शायद आपको ये बात चुभे लेकिन हम कहेंगे ठगी तो हर चुनाव जनता ही जाती है नेता का क्या है गठबंधन हो ही जाता है,

सरकारें आती जाती रहेंगी जनता को जानता ही कौन है चुनावों का मौसम ही जान-पहचान कराता है बाकी दिनों में तो बस हवा ही हवा नसीब होती है महल तो केवल नेताओं के पास होते हैं...वसीम बरेलवी साहब का एक शेर याद आया कि 'हवा से मिल के जिसे फैसले का हक मिल जाए, मैं उस चराग के हाथों में घर नहीं देता।'

बंजारा

दिल्ली दरबार

चुनाव आयोग द्वारा देश में आम चुनाव की तिथियाँ तरीके और आचार संहिता घोषित करते ही विकास, बेरोजगारी, रक्षा ,सुरक्षा, मस्जिद, मंदिरों से बवालित भारत में कई प्रभाव एक साथ हुए हैं जिस कारण थमा सा देश जरा गतिशील हुआ है। सामाजिक प्रभाव की नजर से देखा जाए इस बात को यूँ समझा जा सकता है कि रोजाना मिल बैठकर शतरंजी बाजियां और सियासी गुफ्तगुओं में मस्त मित्र मौला मियां और पंडित श्री माँ-मालूम कारणों से अपने अपने झंडे तले जा बैठ गएँ हैं। विभिन्न नुस्खों और नक्शे बाजियों से अलग अलग राजीनीतिक और धर्म धड़े नुमायाँ हो रहे हैं। भारत की छिपी और छिपाई गयी विविधताएँ बाहर आ रही हैं। आर्थिक प्रभाव से निबटा जाए तो चुनाव आयोग की सबसे प्रतीक्षित और भारत की सबसे महत्वपूर्ण घोषणा होते ही धीरे-धीरे बाजारों और बैंकों से बड़े-बड़े नोट लुप्त होते जा रहे हैं और छोटे बेशक कटे-फटे-चिपके नोटों पर बहार आ रही है। सरकारी और सरकारी संरक्षण में चलने वाली शराब की फैक्ट्रियों के उत्पादन और सप्लाई में इजाफा होता जा रहा है, आबकारी विभागों के लाभित आंकडे और पुलिस विभाग के मुनाफे बढती दिशा में अनुभव होना शुरू हो गएँ हैं। झंडे बनाने, डंडे काटने, टोपियाँ सिलना, भीड़ सप्लाई आदि जैसे घरेलू उद्योगों ने जोर पकड़ा है। घोषणा के राजनीतिक प्रभाव पर तो इतना ही दिखाई देता है कि जनता भरे स्टेडियम के बीच कमल, हाथ, हाथी झाड़ू, साइकिल, लालटेन, वगैरह एक दुसरे को गिराने उठाने के खेल में मशगूल 'कुर्सी ट्राफी' के लिए जनता सब खामोश बैठी वो तमाशा देख रही है जिसके मदारी एक नहीं कई हैं।

पर बन्दे बैरागी को लेना देना क्या? चलो बुलावा आया है माता ने बुलाया है। जय माता दी वाला निमंत्रण उसके पास है, क्षेत्र के सांसद के खास लोग आज पूरे मौहल्ले पंजीकृत वोटरों को बांट गए हैं, उनके बड़े भाई आज आचार संहिता के दौरान ही महारानी भगवती का दरबार सजाएंगे, आज रात जागरण की रात है, जिन-जिन वोटरों को कार्ड पहुंचा है उन्होंने सांसद जी के हिंसात्मक कर्मों को याद करते हुए निमंत्रण पत्र ग्रहण किया और कार्यकर्त्ताओं को अपने आने की मौखिक स्वीकृति दी। आज आचार संहिता की नहीं जागरण की रात है। धर्मपरायण से देश में धर्म, धार्मिक कार्यों और भावनाओं पर ईश्वर की मेहर है, किसी चुनाव आयोग या आचार संहिता का बंधन नहीं है। जग ये जाने न जाने पूरा संसदीय क्षेत्र जानता है कि प्रति पांच वर्षों में आम चुनाव घोषणा पश्चात और छोटे भाई के नामांकन वाले दिन की अगली रात बड़े भाई को माता का बुलावा आता है और महारानी की कृपा से बहुत बड़ा, बहुत बड़े लोगों और क्षेत्र की जनता सहित माता रानी का जगराता और विशाल भंडारा, भाषण और बीच-बीच में मां की भेंटें वाला आयोजन होता है, जिसमें पहुंचना है, मां के आशीर्वाद की रात है आचार संहिता की नहीं...।

रमन सैनी

...क्रमशः पृष्ठ 25 से

आप बचपन से ही जगजीत सिंह की बहुत बड़ी प्रशंसक रहीं और आपने सपना देखा कि जगजीत सिंह आपकी ग़ज़लें गायें और यह सपना किस तरह हकीकत बना?

मुझे बचपन से ही जगजीत सिंह जी की आवाज में गज़लें सुनना बहुत पसंद था उनकी आवाज में बडे-बडे शायरों को सुना करती थी। ईश्वर की कृपा से मेरे अंदर भी लेखन का हुनर था, जिससे मैं अनजान थी। लेकिन जगजीत जी की रूहानी आवाज में उनके द्वारा गाये गए शायरों के उम्दा कलाम मुझे बहुत आकर्षित करते और मेरी रूह में उतर जाते थे। धीरे-धीरे उनकी आवाज को प्रेरणा मानकर बहुत छोटी उम्र से ही उनके लिए गज़लें लिखने लगी। उस वक्त ये नहीं जानती थी कि जीवन में कभी उनसे मुलाकात कर पाऊँगी या नहीं, लेकिन मन में आत्मविश्वास था और ठान चुकी थी कि मुझे उनके लिए गज़लें लिखने का सिलसिला जारी रखना है। जब कॉलेज में पढ़ रही थी तब कई बार ऐसे मौके आए कि मेरी गज़लों को कई गायक कलाकारों ने पसंद किया। लेकिन मैंने कभी अपने सपने में मिलावट नहीं होने दी। अपना नाम और शोहरत पाने के लिए मैंने कभी अपने सपने से समझौता नहीं किया, शायद इसीलिए मुझ पर ईश्वर की असीम कृपा रही कि मैं जगजीत सिंह जी से मिल सकी। उनसे मेरी पहली मुलाकात 28 जुलाई 2011 को मुम्बई के ताज होटल में हुई। वे बेहतरीन गायक कलाकार होने के साथ -साथ बहुत अच्छे और जिंदादिल इंसान थे । उन्होंने मेरी गजलों को इत्मीनान से पढ़ा और बहुत खुश भी हुए। मुझे याद है कि बचपन में मेरे द्वारा उन पर लिखी हुई एक गजल पढ़कर उन्होंने मुझे कहा था कि मोगैम्बो खुश हुआ । वो ग़ज़ल है...

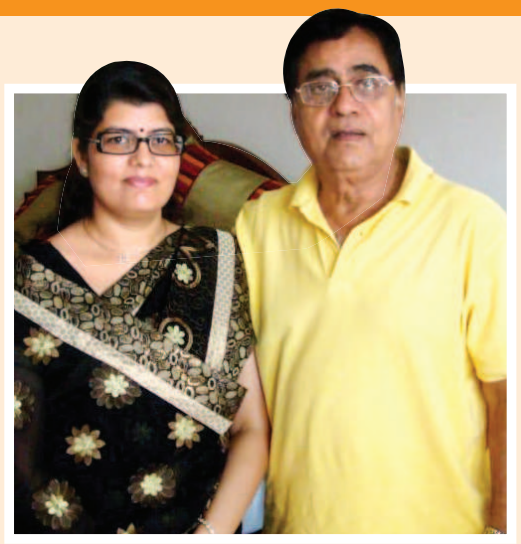

रूह तक कोई पहुँचता है अगर!
या तो खुदा या आपकी आवाज का जादू!!
तार दिल के छेड़ती हैं सरगमें!
ऐसा नशा है आपकी आवाज का जादू!!
मेरी गज़लों के मसीहा आप हैं!
और खुदा है आपकी आवाज का जादू!!
'जीत' कर 'जग' को दिलों पर राज करते हैं!
किससे छुपा है आपकी आवाज का जादू!!

मेरी गज़लों की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा था कि तुम्हारी गज़लों में सबसे अच्छी बात मुझे ये लगी कि तुम्हारा थॉट बहुत ओरिजनल है, इसे हमेशा कायम रखना। उन्होंने एक गजल के एल्बम के लिए मेरी कुछ गज़लें चुनीं थी जिसमें से दो गजलों को तो धुन के साथ मुझे गा कर सुनाया भी। वो मेरी गज़लों पर काम कर रहे थे, लेकिन ब्रेन हैमरेज की वज़ह से अचानक इस दुनिया को अलविदा कह गए। जिसका मुझे जीवन भर बेहद अफसोस रहेगा । मुझे उनके द्वारा दी गई सीख हमेशा याद रहेगी कि सिर्फ एल्बम के लिए सोचकर ही गज़लें मत लिखो, खूब लिखो, तुम्हारे अंदर बहुत योग्यता है इसलिए लिखना कभी मत छोड़ना। हमें अपने गजल के प्रोजेक्ट पर काम करते हुए 2 माह बाद फिर से मिलना था। उनके इस तरह अचानक इस दुनिया से चले जाने के कारण मेरा मन बहुत हताश हो गया और उनके जाने के बाद गज़ल लिखने में जैसे मेरी कोई रुचि ही नहीं रही। मैं 3 साल लेखन से दूर रही और मैंने कोई नई गज़लें नहीं लिखी। हाँ 2012 में कोलकाता के प्रसिद्ध गज़ल गायक उत्पल भट्टाचार्य की सुरीली आवाज में 'दर्द' नाम से गज़लों का एक एलबम निकाल कर जगजीत जी को श्रद्धांजलि दी। उसके बाद उत्पल दा की आवाज में ही मेरे दो गज़ल एलबम 'दो पल' और 'माहताब' आ चुके हैं ।

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

तस्वीर- दीपक

तस्वीर-वीनू मित्तल

रंग चेहरे पे फिर से लगा दो न तुम

होली मुबारक पर प्राप्त हुई तस्वीरों में से चुनिंदा तस्वीर माही संदेश में प्रकाशित की जा रही हैं।

तस्वीर-सानवी

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क paytm

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक 'Mahi sandesh' (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर अतिरिक्त देय डाकखर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक
'माही सन्देश'

खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

साझा कहानी संग्रह 'कथा संदेश'

माही संदेश राष्ट्रीय पत्रिका लेकर आ रही है साझा कहानी संग्रह 'कथा संदेश' अगर आप कहानी लिखते हैं और श्रोताओं को आपकी कहानी बांधकर रखने में सक्षम है तो आपका स्वागत है, चुने हुए कथाकारों की कहानी 'कथा संदेश' में परिचय सहित प्रकाशित की जाएगी साथ ही 'कथा संदेश' कार्यक्रम में उन्हें मंच से अपनी कहानी सुनाने का अवसर भी मिलेगा।

माही संदेश मासिक पत्रिका के साझा कहानी संग्रह 'कथा संदेश' के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नंबर या व्हाट्सएप पर संपर्क करें...

अपनी कहानी हमें अपने परिचय तथा फोटो के साथ ईमेल करें

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश,
मो. 9887409303, 7597288874
email-mahisandesheditor@yahoo.com

सेवा में,

प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**